इमाम हुसैन की सत्यता और क़ुस्तुनतुनिया के हदीस की सच्चाई

अहले बैत की मुहब्बत व प्रतिष्ठा एवं इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की सत्यता का वर्णन

अल्लाह तआला ने क़ुरान करीम में अहले बैत किराम से मुहब्बत का आदेश दिया हैः-

भाषांतरः अए हबीब सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम आप फरमा दीजिए! मैं तुम से इस पर पारिश्रमिक के अहले बैत की मुहब्बत के कुछ और नहीं चाहता हुँ।

(सुरह अश-शूराः 42:23)

और हदीस पाक में हैः-

भाषांतरः तुम अपनी औलाद को 3 बातों पर परवरिश करो पने नबी अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की मुहब्बत, आप के अहले बैत पाक की मुहब्बत एवं क़ुरान की तिलावत।

(अल फत्हुल कबीर, जिल्द 01, पः 59 / अल जामेअ उल कबीर, हदीस संख्याः 924 / जामेअ उल अहादीस, हदीस संख्याः 961 / कंज़ुल उम्माल, हदीस संख्याः 45409)

जैसा के अल्लाह तआला का आदेश हैः-

भाषांतरः निश्चय अल्लाह तआला तो यही चाहता है अए नबी के घर वालो के तुम से प्रत्येक अपवित्रता दूर फरमा दे और तुम्हें पाक कर के खूब सुथरा कर दे।

(सुरह अल अहज़ाबः 33:33)

इस क़ुरानी आयत से साबित है के अल्लाह तआला ने अहले बैत को प्रत्येक प्रकार की चिन्ता, सोंच-विचार, विश्वास व अमली, सभ्याचार, ज़ाहिरी व बातिनी अशुद्धता व अपवित्रता से पवित्र व शुद्ध रखा। इस के शाने-नुज़ूल के संबंध से हज़रत सैयदतना उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा फरमाती हैः

भाषांतरः हज़रत उम्मुल मोमिनीन सैयदतना उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा फरमाती हैं जिस समय सरकार दो आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम मेरे हुजरे में उजागर थे उस समय ये धन्य आयत प्रकट हुईः अए हबीब पाक सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के घर वालों! निश्चय अल्लाह तआला यही चाहता है के प्रत्येक गंदगी व अशुद्धता को तुम से दूर रखे एवं तुम्हें सम्पूर्ण पवित्रता प्रदान करे। जब ये आयत करीम प्रकट हुई तो सरकार पाक सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने हज़रत सैयदह फातिमा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा, हज़रत अली मुरतज़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु, हज़रत हसन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु एवं हज़रत हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को याद किया, फिर हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फरमायाः ये मेरे अहले बैत हैं। उम्मुल मोमिनीन हज़रत उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा ने निवेदन कियाः या रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम क्या मैं अहले बैत से नहीं हुँ? सरकार (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) ने फरमायाः क्यों नहीं! तुम भी अहले-बैत से हो।

(ज़ुजाजातुल मसाबीह, जिल्द 05, पः 316)

जामेअ तिरमिज़ी में हदीस पाक हैः-

भाषांतरः हज़रत सैयदना अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से वर्णित है फरमाते हैं के हज़रत रसूल अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने आदेश कियाः अल्लाह तआला से मुहब्बत किया करो क्यों के वह तुम्हें नेमतों

से संबोधित करता है तथा अल्लाह तआला की मुहब्बत के वास्ते मुझ से मुहब्बत किया करो तथा मेरी मुहब्बत के लिए मेरे अहले-बैत से मुहब्बत किया करो।

(जामेअ तिरमिज़ी, जिल्द 02, पः 219, हदीस संख्याः 219 / मिश्कातुल मसाबीह, जिल्द 02, पः 573 / ज़ुजाजातुल मसाबीह, जिल्द 05, पः 314)

अल्लाह तआला की कृपा व दया व एहसान का परिणाम ये है के उस से मुहब्बत की जाए तथा अल्लाह तआला की मुहब्बत प्राप्त करने के लिए सरकार पाक सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम से मुहब्बत की जाए, हबीब पाक सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की मुहब्बत के लिए अहले बैत पाक से मुहब्बत की जाए।

जैसा के अहले बैत पाक की मुहब्बत हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की मुहब्बत हासिल करने के लिए माध्यम है तथा नबी पाक सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की मुहब्बत माध्यम व क़दम है अल्लाह तआला की मुहब्बत के हासिल करने के लिए जो कोई मनुष्य अल्लाह तआला से निज़दीकी का इच्छुक हो और अल्लाह तआला के दरबार में माँगता हो तो उस के लिए रास्ता व मार्ग यही है के वह अहले बैत किराम से मुहब्बत करें जिस के परिणाम में उसे हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम से निकटता मिलेगा तथा सरकार दो आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के धन्य दरबार से उसे फिर अल्लाह तआला से नज़दीकी नसीब होगी।

सुनन इब्न माजह व जामेअ तिरमिज़ी की रिवायत है सरकार पाक सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने आदेश कियाः

भाषांतरः कसम है उस ज़ात की जिस के वश में मेरी जान है। किसी व्यक्ति के दिल में ईमान दाखिल ही नहीं हो सकता जब तक के वह तुम (अहले-बैत) से अल्लाह और उसके रसूल (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) के लिए मुहब्बत ना हो।

(सुनन इब्न माजह, पः 13, हदीस संख्याः 137)

सुनन इब्न माजह की रिवायत में ये शब्द हैं जब तक के वह इन (अहले-बैत) से अल्लाह तआला के लिए और मेरी खराबत के कारण से मुहब्बत व प्रेम ना करे।

ईमान सम्पूर्ण इबादतों व अहकामों के लिए शर्त का दर्जा रखता है एवं इस हदीस पाक से मालूम होता है के ईमान के लिए अहले-बैत की मुहब्बत शर्त है।

मुहब्बत का आदर्श

सरकार पाक सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने मुहब्बत व प्रेम करने का आदेश दिया तथा मुहब्बत का दर्जा भी बतला दियाः (सुनन अबु दाउद, जिल्द 02, पः 699)

मुहब्बत मानव को अँधा और बेहरा बना देती है यानी प्रिय व मुहिब अपने महबूब के अंदर ना कोई खोट व दोष देख सकता है एवं ना उस के संबंधित कोई दोष सुन सकता है।

मुहब्बत का स्तर व आदर्श ये है के महबूब के अन्दर खोट व दोष हो तब भी दोष दिखाई ना दे एवं अल्लाह तआला एवं उस के हबीब सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने जिन धन्य हसतियों से मुहब्बत व स्नेह व सम्मान का आदेश दिया उन धन्य ज़ातों की पवित्रता व तहारत की घोषणा भी खुद ही किया है तथा उन से प्रत्येक प्रकार के खोट व ऐब की नफी फरमाई है।

यदि कोई अल्लाह तआला की ओर से घोषणा के बाद भी हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की ओर कोई अनुचित चीज़ निकालता है या उनके पवित्र चरित्र पर उंगली उठाता है और इन पर दुनियादारी का आरोप लगाता है, तो वह इन पर विरोध नहीं कर रहा है बल्कि क़ुरानी आयत पर विरोध कर रहा है तथा साथ-साथ मुहब्बत के नियम के विरुद्ध कर के मुहब्बत की सीमा से निकल जाता है।

नबी पाक सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने अहले-बैत किराम से जहाँ मुहब्बत करने का आदेश दिया वहीं अहले बैत किराम से मुहब्बत करने वालों के लिए जन्नत व शफाअत प्रदान की।

भाषांतरः मेरी शफाअत मेरी उम्मत के उन खुश-नसीबों व भाग्यशाली लोगों के लिए है जो मेरे अहले-बैत से मुहब्बत व प्रेम रखते हैं।

(कंज़ुल उम्माल, जिल्द 13, पः 86)

दैलमी और कंज़ुल उम्माल में हदीस पाक हैः-

भाषांतरः चार भाग्यशाली लोग ऐसे हैं मैं क़ियामत के दिन उन की शफाअत करुँगा-

(1)- मेरे अहले-बैत का आदर व सम्मान करने वाला।

(2)- उन के लिए उन की आवश्यकता की चीज़ें पेश करने वाला।

(3)- अवश्यकता के समय उन के लिए बन्दोबस्त करने वाला।

(4)- और दिल व ज़बान से उन की मुहब्बत रखने वाला।

(कंज़ुल उम्माल, जिल्द 13, पः 86)

www.Ziaislamic.com

ज़ुजाजातुल मसाबीह में मुसनद इमाम अहमद की रिवायत हैः-

भाषांतरः हज़रत सैयदना अबु ज़र ग़िफारी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फरमाते हैं जब के वह बाबे-कअबा को थामे हुए थे, मैं ने हज़रत नबी अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम को फरमाते हुए सुना के आप ने आदेश कियाः सचेत रहो! निश्चय मेरे अहले बैत किराम की मिसाल तुम में हज़रत नूह अलैहिस सलाम की कश्ती के प्रकार है जो इस में सवार हुआ वह मुक्ति पा लिया तथा जो इस से पीछे रहा हलाक व नाश हो गया।

(मिश्कातुल मसाबीह, जिल्द 02, 573 / ज़ुजाजातुल मसाबीह, जिल्द 05, पः 315)

अहले बैत एवं सहाबा की मुहब्बत – अहले सुन्नत के लक्षण

सरकार पाक सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने अहले बैत किराम रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम को मुक्ति व सलामती का सन्दूक घोषित किया तथा सहाबा किराम रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम को हिदायत व मार्गदर्शन के तारे (नक्षत्र) घोषित किया। जैसा के आदेश कियाः

www.Ziaislamic.com

भाषांतरः मेरे सहाबा हिदायत व मार्गदर्शन के नक्षत्र हैं, तुम इन में से जिस की भी आज्ञापालन करोगे हिदायत पा लोगे।

(मिश्कातुल मसाबीह, पः 554 / ज़ुजाजातुल मसाबीह, जिल्द 05, पः 334)

मिरखातुल मफातीह शरह मिश्कातुल मसाबीह में हज़रत मुल्ला अली खारी रहमतुल्लाहि अलैह हज़रत इमाम फक़्रुद्दीन राज़ी रहमतुल्लाहि अलैह के हवाले से लिखते हैः-

भाषांतरः अल्हमदुलिल्लाह हम अहले सुन्नत व जमात अल्लाह तआला की कृपा व करम से अहले-बैत किराम रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम की मुहब्बत की कशती में सवार हैं तथा सहाबा किराम रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम के हिदायत वा मार्गदर्शन के सितारों से रेहबरी पार है हैं तथा हमें उम्मीद है के अल्लाह तआला क़ियामत की हौलनाकियों से एवं नरक व दोज़ख़ के क्षेत्र से मुक्ति प्रदान करेगा, हमेशा रेहने वाली तथा नेमतों वाली जन्नत के ऊँचे स्थान पर पहुँचेगा।

हज्जतुल वदाअ से वापसी के समय अहले बैत की मुहब्बत पर खुत्बा

सहीह मुसलिम में हदीस पाक हैः-

www.Ziaislamic.com

भाषांतरः हज़रत सैयदना ज़ैद बिन अरखम रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से वर्णित है वह फरमाते हैं हज़रत रसूलउल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम एक दिन ग़दीर-क़म में खुत्बा आदेश करने के लिए उजागर हुए जो मक्के एवं मदीने के बीच है।

आप (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) ने अल्लाह तआला का धन्यवाद किया, प्रशंसा वर्णन की एवं प्रवचन किया, उपदेश कीं तथा आखिरत की याद दिलाई फिर आदेश कियाः अए लोगो! निश्चय मैं मनुष्य जाति में उजागर हुआ हुँ शीघ्र मेरे रब का खासिद मेरे दरबार में उपस्थित होगा तथा मैं उस की दावत को स्वीकार करेगा, तथा मैं तुम में 2 सर्वश्रेष्ठ व सम्मानित नेमतों छोड़े जा रहा हुँ इन में से एक अल्लाह तआला की किताब है जिस में हिदायत व मार्गदर्शन एवं नूर है बस तुम अल्लाह तआला की किताब को थाम लो तथा मज़बूती से पकड़े रहो, उसके बाद क़ुरान करीम के बारे में निर्देश किया तथा उस की ओर उपदेश दिलाया फिर आदेश कियाः (दुसरी नेअमत) अहले-बैत किराम है। मैं तुम्हें अल्लाह तआला की याद दिलाता हुँ मेरे अहले-बैत के बारे में, मैं तुम्हें अल्लाह तआला की याद दिलाता हुँ मेरे अहले-बैत के बारे में।

(मुसलिम शरीफ, जिल्द 02, पः 279, हदीस संख्याः 2408 / मिश्कातुल मसाबीह, पः 68 / ज़ुजाजातुल मसाबीह, जिल्द05, पः 317/318/319)

“मेरे अहले-बैत किराम के बारे में मैं तुम्हें अल्लाह तआला की याद दिलाता हुँ” ये इस लिए फरमाया के अहले-बैत किराम से मुहब्बत सरकार पाक सल्लल्लाहु

तआला अलैहि वसल्लम के लिए है तथा आप से मुहब्बत अल्लाह तआला के लिए है अर्थात अहले-बैत किराम की मुहब्बत अल्लाह तआला तक पहुँचाने वाली है तो उन के बारे में अल्लाह तआला से ड़रते रहो के कभी तुम्हारी ज़बान से उनके विरुद्ध कोई अनुचित शब्द ना निकले, इस हदीस पाक की शरह (व्याख्या व निर्वचन) में हज़रत मुल्ला अली खारी रहमतुल्लाहि अलैह फरमाते हैः-

भाषांतरः सरकार पाक सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने "मेरी अहले बैत किराम के बारे में मैं तुम्हें अल्लाह तआला की याद दिलाता हुँ।" 2 बार फरमाया इस में हिकमत ये है के प्रथम बार जो फरमाया उस से तात्पर्य व अर्थ आले-पाक रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम हैं तथा दुसरे से तात्पर्य उम्मुहातुल मोमिनीन रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम हैं।

(मिरखातुल मफातीह, जिल्द 05, पः 594)

सहाबा किराम की दुख पहुँचाना नबी पाक सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम को दुख का माध्यम

सरकार दो आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने अहले-बैत किराम रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम के संबंधित निर्देश व चेतावनी से आदेश किया के उनके बारे में अल्लाह से ड़रते रहें तथा इस के साथ-साथ सहाबा किराम

रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम के बारे में भी चेतावनी निर्देश की के जैसा के जामेअ तिरमिज़ी में हदीस पाक हैः-

भाषांतरः हज़रत अब्दुल्लाह बिन मुग़फ्फल रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से वर्णित है आप ने फरमाया के रसूल उल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने आदेश कियाः मेरे सहाबा के बारे में अल्लाह तआला से ड़रते रहो, अल्लाह तआला से ड़रते रहो, मेरे बाद उन्हें निन्दा का लक्ष्य ना बनाओ, बस किसी ने उन से मुहब्बत की तो निश्चय उस ने मेरी मुहब्बत के लिए उन से मुहब्बत की है तथा जिस किसी ने उन से द्वेष रखा तो उस ने मुझ से द्वेष कि बिना पर उन से द्वेष रखा है तथा जिस ने मुझ को दुख दिया निस्संदेह उस ने अल्लाह तआला को दुख दिया है तथा जिस ने अल्लाह को दुख दिया खरीब है के अल्लाह तआला उस की गिरफ्त करे।

(जामेअ तिरमिज़ी, जिल्द 02, पः 225, हदीस संख्याः 3797)

क़ुरान व अहले बैत से नाता – हिदायत की ज़मानत

हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने अहले-बैत किराम से संबंध व नाते को मुक्ति व नजात का माध्यम तथा गुमराही व ज़लालत से सुरक्षा का साधन घोषित किया जो उन लोगों से संबंध रखना चाहता है वह कभी गुमराह नहीं होता तो सोंचना चाहिए! क्या वह उच्च ज़ात बेराहरोई (गलत मार्ग व राह) व दुनिया के इच्छुक का शिकार हो सकते हैं क्या? *असअयाज़बिल्लाह*

अर्थात हज्जतुल वदाअ के अवसर पर जहाँ सरकार दो आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने सारी दुनिया को अमन व सलामती का सन्देश दिया तथा सम्पूर्ण धर्म की घोषणा की वहीं क़ुरान करीम तथा अहले बैत किराम से सम्पर्क व नाता रखने का आदेश दिया जिन से गुलामी का संबंध रखना लोक व परलोक की कृपा व वरदान का माध्यम है। और बेदीनीन व बदमज़हबी तथा द्वेष व गुमराही से बचने के लिए मज़बूत क़िला है।

सुनन बैहखी व जामेअ तिरमिज़ी की रिवायत हैः-

भाषांतरः हज़रत सैयदना जाबिर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु वर्णन करते हैः मैं ने रसूल अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम को हज्जतुल-वदाअ के अवसर पर अरफात में देखा के आप अपनी धन्य ऊँटनी *क़सवा* पर उजागर हैं तथा खिताब कर रहे हैं, मैं ने आप (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) को फरमाते हुए सुनाः "अए लोगो! निश्चय मैं तुम को 2 विशाल वरदान दे कर जा रहा हुँ जब तक तुम उन्हें थामे रहोगे कभी गुमराह ना होगेः वह अल्लाह तआला की किताब (क़ुरान पाक) और मेरी अहले बैत है"!

(तिरमिज़ी, जिल्द 02, पः 219, हदीस संख्याः 3718)

यहाँ ये बात सोंच-विचार के योग्य है के सरकार दो आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के धन्य आदेश के अनुसार अहले-बैत किराम गुमराही से बचाने वाले हुए जिन से नाता व सम्पर्क होने वाला गलत-राह पर नहीं हो सकता तो क्या इन पवित्र व उच्च हस्तियों के संबंध गलत बातें दालना या उन पर दुनियादारी (सांसारिक होना) का आरोप लगाना या उनके किए गए संघर्ष व कर्म को राजनीतिक संघर्ष केहना श्रेष्ठ हो सकता है?

जब के अल्लाह तआला ने अपने पावन कलाम में उनकी पवित्रता व शुद्धता के संबंध से फरमायाः-

भाषांतरः निश्चय अल्लाह तआला तो यही चाहता है अए नबी के घर वालो के तुम से प्रत्येक नापाकी दूर कर दें तथा तुम्हें पवित्र व पाक कर के खूब सुथरा कर दे।

(सुरह अल अहज़ाबः 33:33)

और जिनके लिए हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने दुआ कीः

“अए अल्लाह! ये मेरा परिवार (*अहले-बैत*) तू इन से गंदगी को दूर कर तथा उन्हें सम्पूर्ण रूप से पवित्रता व शुद्धता प्रदान कर!”

(जामेअ तिरमिज़ी, जिल्द 02, पः 219, हदीस संख्याः 3129)

हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की सत्यता व सच्चाई

कुछ लोग ये दृष्टिकोण रखते हैं के शहीदों के सरदार हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का करबला तशरीफ ले जाना एवं आप की विशाल शहादत नउज़बिल्लाह राजनीतिक एवं राज्य के अधिकार को प्राप्त करने के लिए लड़ी जाने वाला युद्ध है।

जब के नबियों के ताजदार हबीब पाक सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने उम्मत के लोगों को करबला के युद्ध के समय इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का साथ देना एवं नुसरत करने के लिए आदेश दिया। क्या कोई ईमान वाला ये केहने की जुर्रत व हिम्मत कर सकता है के सरकार पाक सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने जब मन्सब तथा दुनिया के इच्छा में किसी की मदद करने के लिए फरमाया हो? *अलअयाज़बिल्लाह*

जैसा के कंज़ुल उम्माल में हदीस पाक हैः-

भाषांतरः निश्चय मेरा ये बेटा यानी हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु इराक़ के एक इलाक़े में शहीद किया जाएगा तो उम्मत के सदस्यों में से जो उस समय उपलब्ध हों उसे चाहिए के इन की हिमायत व तरफ में खड़ा हो जाए।

www.Ziaislamic.com

(कंज़ुल उम्माल, जिल्द 13, पः 111, हदीस संख्याः 621)

इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को किस प्रकार संसार के नापायदार इक़तेदार की इच्छा हो सकती है जब के आप ही के घराने से सारे निर्माण को धर्मनिष्ठता, तक़वा व परहेज़गारी एवं धर्मपरायणता की दौलत मिली है। हज़रत सैयदना इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को इस नाश होने वाली दुनिया की किस प्रकार इच्छा हो सकती है जबके आप रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के सामने सरकार पाक सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम का धन्य आदेश हैः-

भाषांतरः एक कोड़ा बराबर जन्नत का स्थान दुनिया एवं इस की सारी चीज़ों से श्रेष्ठतर है।

(सहीह बुखारी, हदीस संख्याः 3250)

जिस जन्नत में एक चाबुक बराबर स्थान दुनिया से श्रेष्ठतर है, आप तो इसी जन्नत में रेहने वाले जवानों के सरदार हैं जैसा के जामेअ तिरमिज़ी की रिवायत हैः-

भाषांतरः हसन तथा हुसैन (रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम) जन्नती जवानों के सरदार हैं।

(जामेअ तिरमिज़ी, जिल्द 02, पः 217, हदीस संख्याः 3701)

अहले-बैत का निरादर गुमराही व इमान के विनाश का साधन

इमाम बैहखी की शुअबुल इमान में हदीस पाक वर्णन है, सरकार पाक सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने आदेश किया हैः-

भाषांतरः 6 सदस्य ऐसे हैं जिस पर मेरी लानत है तथा अल्लाह तआला की लानत तथा प्रत्येक नबी की दुआ स्वीकार होती है... अल्लाह तआला की हराम की हुई चीज़ों को हलाल समझने वाला तथा मेरी पवित्र वंश से संबंधित उन चीज़ों को हलाल समझने वाला जिन्हें अल्लाह तआला ने हराम किया है यानी इन की निरादर व असम्मान करने वाला।

(बैहखी शुअबुल ईमान, हदीस संख्याः 3850 / मिश्कातुल मसाबीह, जिल्द 01, पः 22)

इस से स्पष्ट है के अहले-बैत किराम का निरादर लानत व हलाकत का साधन है।

जैसा के जामेअ तिरमिज़ी में हदीस पाक हैः-

भाषांतरः हदीस के रावी केहते हैं के हज़रत सलमा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा ने वर्णन करते हुए कहा के मैं हज़रत उम्मुल मोमिनीन उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा की सेवा में उपस्थित हुईं जब के वह रो रही थी मैं ने निवेदन कियाः आप के रोने का कारण क्या है तो हज़रत उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा ने फरमाया मैं ने सपना देखा- "हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के सर अनवर तथा रेश पाक पर ग़ुबार है निवेदन करने पर फरमायाः मैं अभी इमाम हुसैन की शहादत के स्थान (करबला) में उपस्थित था।"

(जामेअ तिरमिज़ी, जिल्द 02, पः 218, हदीस संख्याः 3704)

करबला के युद्ध में सरकार पाक सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम का तशरीफ ले जाना इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की सच्चाई व सत्यता स्पष्ट दलील है।

इमाम हसन व हुसैन को चाहने वाला भी जन्नती

प्रसिद्ध मुहद्दिस इमाम अबुल खासिम तबरानी (जन्मः 260 हिज्री – देहान्तः 360 हिज्री) रहमतुल्लाहि अलैह ने मुअजम औसत में अपनी सनद के साथ हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से वर्णित की है, तथा अल्लामा अली मुत्तक़ी हिन्दी (देहान्तः 975 हिज्री) ने कंज़ुल उम्माल जिल्द 13 पः 103-104

पर इब्न असाकीर के हवाले से वर्णन किया है, हज़रत इमाम तबरानी की मुअजम औसत, हदीस संख्याः 6649 व्याख्या की जा रही हैः-

भाषांतरः हज़रत सैयदना अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से वर्णित है हज़रत रसूलउल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने असर की नमाज़ पढ़ी, जब आप चौथी रकात में थे हसन तथा हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम उपस्थित हुए यहाँ तक के सरकार पाक सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की धन्य पुश्त (पीठ) पर सवार हो गए आप ने उन को अपने सामने बिठाया हज़रत हसन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु आगे बढ़े हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने हज़रत हसन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को अपने दायें कन्धे (शाना) पर उठा लिया तथा हज़रत हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को बायें कन्धे पर उठा लिया फिर आदेश कियाः अए लोगो! क्या मैं तुम्हें बतलाउँ वह कौन हैं जिन के नाना, नानी सारे विश्व से श्रेष्ठतर है? क्या मैं तुम्हें बतलाउँ वह कौन हैं जिन के मामू तथा खाला सब के मामू तथा खाला से श्रेष्ठतर है? क्या मैं तुम्हें बतलाउँ वह कौन हैं जिन के माता-पिता सब के माता-पिता से श्रेष्ठतर है? सुनो! वह हसन और हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम हैं। इन के नाना जान अल्लाह तआला के रसूल (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) हैं और नानी जान खदीजा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा हैं। इन की माँ फातिमा (रज़ियल्लाहु तआला अन्हा) बिन्त रसूल (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) हैं, इन के पिता अली बिन अबु तालिब (रज़ियल्लाहु तआला अन्हु) हैं, इन के चाचा जअफर बिन अबु तालिब (रज़ियल्लाहु तआला अन्हु) हैं, इन की फूफी उम्मे हानी बिन्त अभु तालिब (रज़ियल्लाहु तआला अन्हु) हैं, इन के मामू खासिम बिन (बेटे) रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम है, इन की खालाएँ ज़ैनब (रज़ियल्लाहु तआला अन्हु),

www.Ziaislamic.com

रुक़ैया (रज़ियल्लाहु तआला अन्हा) और उम्मे कुल्सूम (रज़ियल्लाहु तआला अन्हा), रसूलउल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की बेटियाँ, इन के नाना जान जन्नत में हैं, इन के पिता जन्नत में हैं, इन की नानी जन्नत में है, इन की माँ जन्नत में हैं, इन के चाचा जन्नत में हैं, इन की फूफी जन्नत में हैं, इन की खालाएँ जन्नत में हैं, वह खुद जन्नत में हैं और उनकी बेहन जन्नत में हैं।

(मुअजम औसत तबरानी, हदीस संख्याः 6649)

और जो भी इन दोनों से मुहब्बत रखे वह जन्नती हैं।

(कंज़ुल उम्माल, जिल्द 13, पः 103/104)

हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की प्रतिष्ठा

धन्य जन्म की शुभ-सूचना

सरकार पाक सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की चाची ने एक सपना देखा और हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की धन्य सेवा में उपस्थित हो कर निवेदन कीं तो सरकार दो आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने उसकी

www.Ziaislamic.com

सुखी ताबीर (विवेचना) वर्णन की और इमाम हुसैन के जन्म की शुभ-सूचना दी जैसा के इमाम बैहखी की दलाईल उन नबुव्वह में वर्णन हैः-

भाषांतरः हज़रत उम्मे फज़्ल बिन्त हारिस रज़ियल्लाहु तआला अन्हा वर्मन करती हैं के वे सरकार दो आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के पावन दरबार में उपस्थित हो कर विनती कीं या रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम! मैं ने आज रात एक संकटपूर्ण सपना देखा है, सरकार ने आदेश कियाः आप ने क्या सपना देखा? निवेदन रने लगीं वह बहुत ही चिन्ता का माध्यम है। आप ने आदेश किया वह क्या है? निवेदन करने लगीः मैं नें देखा "जैसे आप के धन्य शरीर से एक भाग काट दिया गया तथा मेरी गोद में रख दिया गया.।" सरकार पाक सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने आदेश कियाः तुम ने बहुत अच्छा सपना देखा है। इनशाल्लाह फातिमा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा को नंदन होंगे तथा आपकी गोद में आएँगे अर्थात ऐसा ही हुआ, हज़रत फातिमा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा को हज़रत इमाम हुसैन जन्म हुए एवं वह मेरी गोद में आए जैसा के नबी करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने शुभ-सूचना दी थी, फिर एक दिन मैं नबी करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की धन्य सेवा में उपस्थित हुई तथा हज़रत हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को आप की धन्य सेवा में पेश किया फिर उसके बाद क्या देखती हुँ के सरकार पाक सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की आँखें आंसूओं से भरी हुई हैं, ये देख कर मैं ने निवेदन किया या रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम मेरे माता-पिता आप पर क़ुरबान! इन आँसुओं का कारण क्या है? नबी पाक सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने आदेश कियाः जिब्रील अलैहिस सलाम ने मेरी सेवा में उपस्थित हो कर निवेदन कियाः शीघ्र मेरी उम्मत के कुछ लोग मेरे इस बेटे को शहीद करेंगे।

www.Ziaislamic.com

मैं ने निवेदन किया सरकार क्या वह इस नंदन को शहीद करेंगें? सरकार पाक सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने आदेश किया हाँ! और जिब्रील अमीन अलैहिस सलाम ने उस स्थान की सूखी मिट्टी सेवा में पेश की।

(दलाईल उन नुबुव्वह लिल बैहखी, हदीस संख्याः 2805 / मिश्कातुल मसाबीह, जिल्द 02, पः 572 / ज़ुजाजातुल मसाबीह, जिल्द 05, पः 327-328)

हज़रत उम्मे फज़्ल रज़ियल्लाहु तआला अन्हा की हदीस पाक में हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के धन्य जन्म की शुभ-सूचना है उस के साथ-साथ सरकार दो आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की ग़ैब-दानी (अज्ञात व पैगम्बरी-ज्ञान) की प्रतिभा व शान भी उजागर है के आप अल्लाह तआला के प्रदान से माओं के पेट में क्या है जानते हैं।

जैसा के सुरह लुक़मान की अंत आयत में जो वर्णन है उस से तात्पर्य ज़ाती-ज्ञान है वह केवल अल्लाह तआला अलीम व ख़बीर के गुण हैं अर्थात हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने अल्लाह तआला की प्रतिदान से ना केवल धन्य जन्म की शुभ-सूचना दी बल्कि लिंग का नियुक्त भी फरमा दिया आदेश कियाः लड़का जन्म होगा अधिक ये भी फरमा दिया के वह हज़रत उम्मे फज़्ल रज़ियल्लाहु तआला अन्हा की गोद में आएँगें।

धन्य जन्मः

हज़रत इमाम हसन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के प्रिय जन्म के 50 दिन बाद हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु कि उत्पत्ति हुई आप का धन्य जन्म मंगलवार 5 शअ़बानुल मुअ़ज़म 4 हिज्री मदीने तैयिबा में हुई।

(मअ़रिफतिस सहाबा ली अबी नुऐम)

आपके पद

इमाम आ़ली मखाम सैयदु शुहदा हज़रत सैयदना इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु कि कुन्नियत अबु अबदुल्लाह है तथा आपके अन्य उपाधि व उपपद- रेहाने रसूल सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम, सैयद शहबाब अहले जन्नह, अर रशीद, अल तैयिब, अल ज़की, अल सैयद, अल मुबारक हैं।

जब आप के जन्म हुआ तो हुज़ूर नबी अकरम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम ने आप के कान में अज़ान कही जैसा के रिवायत हैः-

(मुअ़जम कबीर तबरानी, हदीस संख्याः 2515)

मुअ़जम कबीर तबरानी में रिवाय हैः-

www.Ziaislamic.com

भाषांतरः हज़रत सैयदना अ़ली मुरतज़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से वर्णित है के आप ने अपने बड़े नंदन सैयदना हसन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का धन्य नाम हमज़ा तथा सैयदना हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का मुबारक नाम इन के चाचा हज़रत जअ़फर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के नाप पर रखा, फिर हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम ने इन का नाम हसन और हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम रखा।

(मुअ़जम कबीर तबरानी, हदीस संख्याः 2713)

हसन व हुसैन- जन्नती नाम

हसन तथा हुसैन यह दोनों नाम अहले जन्नत के नामों में से हैं तथा इसलाम से पूर्व अ़रब ने यह दोनों नाम ना रखे।

अ़ल्लामा इ़ब्ज हज्र मक्की हैतमी रहमतुल्लाहि अलैह ने अल सवाअ़ख अल महरखह पः 115, में रिवायत आख्यान किए हैः-

(अल सवाइ़ख अल महरखह पः 115, तारीक़ुल खुलेफा, जिल्द 1, पः 149)

www.Ziaislamic.com

सरकार पाक सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम ने ह़ज़रत हसन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु तथा ह़ज़रत हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का अ़खीखा फरमायाः

भाषांतरः सैयदना अ़बदुल्लाह बिन अ़ब्बास रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से वर्णित है के ह़ज़रत रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम ने ह़ज़रात हसन व हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के अ़खीखे में दुंब्बे (भेड़) ज़िबा किए।

(सुनन निसाई, किताबुल अ़खीखह, ह़दीस संख्याः 4230)

भाषांतरः जब जन्नती लोग जन्नत में प्रवेश होंगे तो जन्नत विनती करेगीः ऐ पालनहार कया तू ने वादा नहीं किया के तू 2 अरकान से आभूषण करेगा? तो अल्लाह तआ़ला आदेश करेगाः कया मैं ने तुझे हसन व हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से आभूषण नहीं किया? यह सुन कर जन्नत दुलहन (नववधू) के प्रकार गर्व करने लगेगी।

(मुअ़जम औसत तबरानी, ह़दीस संख्याः 343, जामेअ़ अल हादिस लिल सुयूती, ह़दीस संख्याः 1331, अल जामअ़ अल कबीर लिल सुयूती, ह़दीस संख्याः 1342, मजमअ़ अज़ ज़वाइ़द अल फवाइ़द, ह़दीस संख्याः 15096, कंज़ुल उ़म्माल, जिल्द 13, पः 106, ह़दीस संख्याः 34290)

ह़ज़रत इ़माम हुसैन से मुहब्बत पर संबोधन

www.Ziaislamic.com

सुनन इब्न माजह शरीफ में हदीस पाक हैः-

भाषांतरः सैयदना अबु हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से वर्णित है के हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम ने आदेश फरमायाः जिस ने हसन और हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा से मुहब्बत व प्रेम किया, इस ने वास्तव में मुझ ही से मुहब्बत कि और जिस ने हसन तथा हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्ुमा से द्वेष रखा इस ने मुझ ही से द्वेष रखा।

(सुनन इब्न माजह शरीफ, हदीस संख्याः 148)

हसनैन करीमैन से मुहब्बत- अल्लाह से मुहब्बत की जमानत

हज़रत उ़सामा बिन ज़ैद रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा से मरवी हदीस शरीफ में हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम ने हसनैन करीमैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से संबंधित अनुदेश कियाः

भाषांतरः यह दोनों मेरे (सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम) बेटे हैं तथा मेरी बेटी के बेटे हैं। ऐ अल्लाह! तू इन दोनों से मुहब्बत व स्नेह फरमा तथा जो इन से मुहब्बत रखे इसके अपना महबूब व प्रिय बनाले।

www.Ziaislamic.com

(जामे तिर्मिज़ी, हदीस संख्याः 4138)

अल्लाह तआ़ला का प्रिय व महबूब मन्ना इ़माम आ़ली मखाम कि मुहब्बत से भाग्य होती है। जैसा के हदीस शरीफ में हैः-

भाषांतरः अल्लाह तआ़ला इस को अपना प्रिय व महबूब बनाले जिस ने हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से मुहब्बत व स्नेह रखी।

(जामे तिर्मिज़ी, जिल्द 2, पः 218, हदीस संख्याः 4144)

हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम ने इ़माम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को अपनी पावन गोद में उठाया तथा आप के लबों को बोसा दे कर दुआ़ फरमाईः-

भाषांतरः ईलाही मैं इन से मुहब्बत रखता हुँ तू भी इन से मुहब्बत रख एवं जो इन से मुहब्बत रखे इस को अपना महबूब व प्रिय बनाले।

(जामे तिर्मिज़ी, जिल्द 2, पः 218, हदीस संख्याः 4138)

इ़माम हुसैन के लिए सरकार पाक ने सजदे लम्बे कर दिया

www.Ziaislamic.com

सुनन निसाई, मुसनद इमाम अहमद, मुसन्नफ इब्न अबी शैबा, मुसतदरक अला सहिहैन, मुअजम कबीर तबरानी, मजमअ अल ज़वाईद, सुनन अल कुबरा लिल बैहखी, सुनन कुबरा लिल निसाई, अल मुतालिब अल यआला, मुसनद अबी लैअला तथा कंज़ुल उम्माल आदि में हदीस मुबारक हैः-

भाषांतरः हज़रत अबदुल्लाह बिन शद्दाद रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से वर्णित है, वह अपने पिता से वर्णित करते हैं, इन्हों ने फरमाया के हज़रत रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम इशां कि नमाज़ के लिए हमारे पास आए, इस स्थिति में आप हज़रत हसन या हज़रत हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को उठाए हुए थे, फिर हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम आगे तशरीफ ले गए तथा इन्हें बिठा दिया, फिर आप ने नमाज़ के लिए तकबीर फरमाई एवं नमाज़ अदा करने लगे नमाज़ में आप ने लम्बा सजा किया, मेरे पिता कहते हैः- मैं ने सर उठा कर देखा के हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम सजदे में है हैं तथा शहज़ादे रज़ियल्लाहु तआला अन्हु आप कि धन्य पीठ पर हैं। तो मैं फिर सजदे में चला गया, जब हज़रत रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम नमाज़ से फारिग़ हुए तो सहाबा किराम ने विनती कीः या रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम! आप ने नमाज़ में सजदा लम्बा (तवील) फरमाया के हमें आशंका हुई के कहीं कोई घटना पेस नहीं आई, या आप पर अल्लाह कि वही प्रकट नहीं हो रही है? तो सरकार पाक सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने आदेश फरमायाः इस प्रकार कि कोई बात नहीं हुई सिवाए यह के मेरा (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) बेटा मुझ पर सवार हो गया था, और जब तक वह अपनी इच्छा से ना उतरे मुझे हटना पसंद ना हुआ।

www.Ziaislamic.com

(सुनन निसाई, हदीस संख्याः 1129, मुसनद इमाम, हदीस संख्याः 15456, मुसन्नफ इब्न अबी शैबा, जिल्द 7, पः 514, मुसतदरक अला सहिहैन, हदीस संख्याः 4759/6707, मुअजम कबीर तबरानी, हदीस संख्याः 6963, मजमअ अज़ ज़वाईद, जिल्द 9, पः 181, सुनन अल कुबरा लिल बैहखी, हदीस संख्याः 3558, सुनन कुबरा लिल नसाई, जिल्द 1, पः 243, हदीस संख्याः 727, अल मुतालिब अल आलियह, हदीस संख्याः 4069, मुसनद अबी यआला, हदीस संख्याः 3334, कंज़ुल उम्माल हदीस संख्याः 37706/37705/34380)

सरकार पाक ने हसनैन करीमैन कि लिए खुत्बा रोक दिया

जैसा के जामे तिर्मिज़ी, सुनन अबु दाऊद, सुनन निसाई में हदीस मुबारक हैः-

भाषांतरः हज़रत अबदुल्लाह बिन बरीदह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु कहते हैं के इन्होंने हज़रत अबु बरीदह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को कहते हुए सुना हबीब अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम हमें खुत्बा आदेश कर रहे थे के हसनैन करीमैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु धारीदार वस्त्र पहन कर लड-खडाते हुए आ रहे थे तो हज़रत रसूल अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम मिम्बर शरीफ से नीचे तशरीफ लाय इमाम हसन व इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा को गोद में उठा लिया फिर (मिम्बर पर उजागर हो कर) आदेश फरमायाः अल्लाह तआला ने सत्य फरमायाः तुम्हारे धन तथा तुम्हारे औलाद एक परीक्षा है। मैं ने इन दोनों बच्चों को देखा संभल-संभल कर चलते हुए आ रहे थे लड-खडा रहे

www.Ziaislamic.com

थे मुझ से सहन ना हो सका यहाँ तक के मैं ने अपने खुत्बे को रोक कर इन्हें उठा लिया है।

(जामे तिर्मिज़ी, जिल्द अबवाबुल मनाखिब, पः 218, हदीस संख्याः 3707, सुनन अबु दाऊद, किताबुस सलाह, हदीस संख्याः 935, सुनन निसाई किताबुल जुमआ हदीस संख्याः 1396, ज़ुजाजातुल मसाबीह, जिल्द 1, पः 333)

हसनैन करीमैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा का अस्तित्व शरीअत का दर्पण

इस प्रिय हदीस से हबीब पाक सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम ने शहज़ादे कि स्तर व उपाधि तथा इन से अपने पूर्ण हृदय के संबंध को प्रकाशन कर दिया के बचपन में शहाज़ादों के धरती पर गिर जाने का केवल चिन्ता भी हबीब पाक सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम के लिए अस्वीकार्य है।

हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम ने करम नवाज़ी के सीमा दिखादी के शहज़ादे के लिए खुत्बे को रोक दिया मिम्बर (धर्मोपर्देशक का आसन) से नीचे तशरीफ ला कर इन्हें उठा लिया, अपने इस पावन कर्म के द्वारा दिन के जैसा स्पष्ट कर दिया के इनका अस्तित्व घर्म के लिए हैं, क्यों के सांसारिक कार्य के लिए खुत्बा रोकना नहीं जा सकता।

www.Ziaislamic.com

फिर मिम्बर पर निवास करा इन के चलने कि सुन्दर अदाओं का वर्णन करते हुए यह कर्म भी स्पष्ट कर दिया के इन कि हर हर अदा धर्म व शरीअ़त हैं।

इ़माम आली मखाम कि हबीब पाक सल्लल्लाहु तअ़ाला अलैहि वसल्लम से उच्च नज़दीकी कि यह शान व महिमा के गहवारा --- में आप के रोने से हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु तअ़ाला अलैहि वसल्लम को तकलीफ व दुःख होताः-

भाषांतरः सैयदना ज़ैद बिन अबी ज़ियादा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से वर्णित है, हज़रत रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु तअ़ाला अलैहि वसल्लम उम्मुल मोमिनीन आयशा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा के भवन से बाहर तशरीफ लाय तथा हज़रत फातिमा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा के घर से गुज़र हुआ इ़माम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के रोने कि आवाज़ सुनी तो आदेश फरमायाः बेटी कया आप को मालूम नहीं! इन का रोना मुझे (सल्लल्लाहु तअ़ाला अलैहि वसल्लम) तकलीफ देता है।

(नूरुल अबसार, मनाखिब अल बैतुल नबी उल मुक़तार, जिल्द 139)

बचपन में इ़माम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का रोना हबीब पाक सल्लल्लाहु तअ़ाला अलैहि वसल्लम को दुःख व तकलीफ का कारण है तो ग़ैर करना चाहिए के जिन अत्याचारों ने दल के करबला में ईमाम अ़ाली मखाम पर कठोरता व अत्याचार की सीमा पार करदी।

आप के – को प्यासा वध (संहार) किया। आप के तन पर घोड़े दौड़ाए, अन्य अहले बैत किराम व सरदार इ़माम को अत्यन्त तकलीफ व हानि पहुंचाकर इन्हें शहीद किया। 6 महीने के राजकुमार अ़ली असग़र रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को बजाए पानी प्रस्तुत करने के तीर चला कर बेदर्दी से शहीद कर डाला इन निर्दयी के अत्याचार हरकत तथा खतरनाक घटना से हबीब पाक सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम के लिए – को किस प्रकार तकलीफ व दुःख हुआ होगा।

क्या यह हानि व तकलीफ खाल जाएगी? कभी नहीं! अल्लाह तआ़ला ने आदेश फरमयाः

भाषांतरः निस्संदेह जो लोग अल्लाह तआ़ला तथा इस के रसूल अकरम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम को दुख पहुँचाते हैं, अल्लाह तआ़ला ने उन पर दुनिया और आख़िरत में लानत की है एवं उनके लिए अपमानजनक यातना तैयार कर रखी है।

(सुरह अलःअह़ज़ाबः 33:57)

www.Ziaislamic.com

यज़ीद का सत्य चेहरा – हदीस व इतिहास के आईने में

नबी अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने क़ियामत तक स्पष्ट व प्रकट होने वाले सम्पूर्ण फितनों की स्पष्टीकरण व विस्तार वर्णन की है। आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने यज़ीद के फितने से भी उम्मत को सचेत फरमाया, इस सिलसिले में एक से अधिक हदीसों वर्णन हैं, कुछ रिवायतों में इशारे से वर्णन है तथा कुछ में स्पष्ट रूप से है के उम्मत में सब से प्रथम फसाद करने वाला, सुन्नतों को पामाल करने वाला, धर्म में बिगाड़ लाने वाला, बनी-उमैय्यह का यज़ीद नामी एक व्यक्ति होगा।

इस सिलसिले में हदीस के विज्ञान व विद्या के इमाम अबु बक्र इब्न अबी शैबा रहमतुल्लाहि अलैह (देहान्तः 235 हिज्री) ने अपनी मुसन्नफ में,

इमाम अबु यअला रहमतुल्लाहि अलैह (जन्मः 211 हिज्री, देहान्तः 307 हिज्री) ने अपनी मुसनद में,

इमाम अहमद बिन हुसैन बैहखी रहमतुल्लाहि अलैह (देहान्तः 458 हिज्री) ने दलाईल उन नुव्वह में,

हाफिज़ इब्न हजर असखलानी रहमतुल्लाहि अलैह (जन्मः 773 हिज्री, देहान्तः 852 हिज्री) ने अल मतालिब उल आलिया में,

इमाम शहाबउद्दीन अहमद बिन हजर मक्की हैतमी रहमतुल्लाहि अलैह ने अस सवाईख अल मुहरिक़ा में

तथा अल्लामा इब्न कसीर (जन्मः 700 हिज्री, देहान्तः 774 हिज्री) ने बिदायह वन निहायह में,

इमाम जलालउद्दीन सुयूती रहमतुल्लाहि अलैह ने तारीक़ अल खुलफा में हदीसें व्याख्या की है।

तीसरी सदी हिज्री के उच्च व विशेषज्ञ मुहद्दिस इमाम अबु यअला रहमतुल्लाहि अलैह (जन्मः 211 हिज्री, देहान्तः 307 हिज्री) ने अपनी मुसनद जिल्द 02, पः 176 में सनद के साथ हदीस पाक रिवायत की हैः-

भाषांतरः हज़रत सैयदना अबु उबैद बिन जर्रह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से वर्णित है हज़रत रसूलउल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने आदेश कियाः मेरी उम्मत का मामला न्याय के साथ स्थापित रहेगा यहाँ तक के सब से प्रथम इस में दरार डालने वाला बनु-उमैय्यह का एक व्यक्ति होगा जिस को यज़ीद कहा जाएगा। इसके सम्पूर्ण रावी ईमानदार व विश्वसनीय हैं।

(मुसनद अबु यअला, तारीक़ उल खुलफा, पः 166)

अधि अबुल फिदा इसमाईल बिन उमर, नामवर इब्न कसीर (जन्मः 700 हिज्री, देहान्तः 774 हिज्री) ने अपनी पुस्तक बिदायह वन निहायह, जिल्द 06, पः 256 में इस हदीस पाक को व्याख्या किया है।

www.Ziaislamic.com

उपर्युक्त वर्णन हदीस पाक को महान मुहद्दिस हज़रत इमाम शहाबउद्दीन अहमद बिन हजर मक्की हैतमी रहमतुल्लाहि अलैह ने भी अस सवाईख अल मुहरिक़ा, पः 132 में व्याख्या किया है। आप ने इस सिलसिले की अधिक एक रिवायत अस सवाईख अल मुहरिक़ा, पः 132 में वर्णन की हैः

भाषांतरः हज़रत सैयदना अबु दरदा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से वर्णित है उन्हों ने फरमाया मैं ने हज़रत नबी अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम को फरमाते हुए सुनाः सब से प्रथम जो मेरी सुन्नत को बदलेगा वह बनु-उमैय्यह का एक व्यक्ति होगा जिस को यज़ीद कहा जाएगा।

अल्लामा इब्न कसीर ने बिदायह वन निहायह, जिल्द 06, पः 256 में हज़रत अबु ज़र ग़िफारी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की रिवायत से इस को व्याख्या किया, इस में "जिस को यज़ीद पुकारा जाएगा" के शब्द वर्णन नहीं, अधिक ये रिवायत निम्नलिखित पुस्तकों में भी उपलब्ध हैः-

मुसन्नफ इब्न अबी शैबा, जिल्द 08, पः 341, हदीस संख्याः 145

दलाईल उन नबुव्वह लिल बैहखी, हदीस संख्याः 2802

मतालिब उल आलियह, किताबुल फुतूह, हदीस संख्याः 4584

मेरी उम्मत का विनाश खुरैश के कुछ लड़कों के हाथों से होगी

सहीह बुखारी, जिल्द 02, किताबुल फितन, पः 1046, हदीस संख्याः 7058 में हैः-

भाषांतरः अम्र बिन यहया सईद बिन अम्र बिन सईद अपने दादा अम्र बिन सईद रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से वर्णित करते हैं उन्हों ने फरमायाः मैं मदीने पाक में हज़रत नबी अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की मसजिद में हज़रत अबु हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के साथ बैठा हुआ था तथा मरवान भी हमारे साथ था, हज़रत अबु हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फरमायाः मैं ने सत्यवादी पैगम्बर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम को आदेश करते हुए सुनाः "मेरी उम्मत की हलाकत (विनाश) ख़ुरैश के कुछ लड़कों के हाथों से होगी।" मरवान ने कहा अल्लाह तआला ऐसे लड़कों पर लानत करे, हज़रत अबु हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फरमाया यदि मैं केहना चाहुँ के वह बनी फला एवं बनी फलां हैं तो कह सकता हुँ, हज़रत अम्र बिन यहया केहते हैं मैं अपने दादा के साथ बनी मरवान के पास गया जब के वह सीरिया देश के राज्यपाल थे, बस आप ने उन्हें कम उम्र लड़के के पास तो हम से फरमाया शीघ्र ये लड़के उन ही में से होंगे, हम ने कहा आप श्रेष्ठतर व बेहतर जानते हैं।

लड़कों के शासन से अल्लाह की सुरक्षा माँगों

मुसनद इमाम अहमद में हदीस पाक है (हदीस संख्याः 3800)-

भाषांतरः हज़रत सैयदना अबु हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से वर्णित है हज़रत रसूलउल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने आदेश कियाः सत्तर की दिहाई के आरम्भ से और लड़कों के राज्य व शासन से अल्लाह तआला की पनाह व सुरक्षा माँगों।

(मुसनद अहमद, हदीस संख्याः 3800)

सहीह बुखारी के अनुवादक फत्हुल बारी हाफिज़ अहमद बिन हजर असखलानी रहमतुल्लाहि अलैह (जन्मः 773 हिज्री, देहान्तः 852 हिज्री) मुसन्नफ इब्न अबी शैबा के हवाले से हज़रत अबु हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की ही एक और रिवायत व्याख्या करते हुए लिखते हैः

भाषांतरः मुसन्नफ इब्न अबी शैबा की रिवायत (हदीस) में है के हज़रत सैयदना अबु हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बाज़ार में चलते हुए भी ये दुआ करते "अए अल्लाह! सन 60 हिज्री और लड़कों का राज्य व शासन मुझ तक ना पहुँचे।"

हाफिज़ इब्न हजर असखलानी रहमतुल्लाहि अलैह रिवायत व्याख्या करने के बाद फरमाते हैः- इस रिवायत में इस बात की ओर इशारा है के प्रथम लड़का जो राज्य व शासन बनेगा वह 60 हिज्री में होगा। अर्थात ऐसा ही हुआ के यज़ीद बिन

मुअवियह इसी वर्ष राज्य के आसन पर बैठ और 64 हिज्री तक रह कर हलाक हो गया।

सहीह बुखारी के अनुवादक अल्लामा बदरउद्दीन ऐनी हनफी रहमतुल्लाहि अलैह उमदतुल खारी किताबुल फुतून, जिल्द 16, पः 333 में हुकूमत करने वाले प्रथम लड़के का मसदाख़ नियुक्त करते हुए फरमाते हैः-

भाषांतरः हुकूमत करने वाला पेहला लड़का यज़ीद, उस का वह योग्य है।

क़ियामत के खरीब उठने वाले फितनों से संबंधित जो हदीस पाक में वर्णन हैः-

भाषांतरः फिर गुमराही की ओर बुलाने वाले आएँगें।

इस हदीस पाक की शरह में हज़रत शाह वली उल्लाह मुहद्दिस दहेलवी रहमतुल्लाहि अलैह हुज्जतुल्लाहिल बलिग़ा, जिल्द 02, पः 213 में लिखते हैः-

भाषांतरः और गुमराही की ओर बुलाने वाले सीरिया में यज़ीद और इराक़ में मुक़तार हैं।

www.Ziaislamic.com

फक्रुल मुहद्दिसीन अबुल हसनात हज़रत सैय्यद अब्दुल्लाह शाह नक्षबंदी मुजद्दिदी खादरी मुहद्दिसे-देक्कन रहमतुल्लाहि अलैह ने मिरखात के हवाले से हज़रत मज़हर रहमतुल्लाहि अलैह का कथन व्याख्या किया हैः-

भाषांतरः उन लड़कों से तात्पर्य वह हैं जो खुलेफा-राशिदीन के बाद थे जैसे यज़ीद और अब्दुल मलिक बिन मरवान आदि।

(व्याख्यात्मक ज़ुजाजातुल मसाबीह, जिल्द 04, किताबुल फुतून, पः 228 / मिरखातुल मफातीह, जिल्द 05, किताबुल फुतून, पः 140)

इस सीमित समय में उस ने उम्मत में असाधारण फसाद फैलाया के मदीने पाक में (जहाँ से दुनिया को अमन व सलामती प्राप्त हुई) विनाशक मचाया, पावन मक्का जिस को अल्लाह तआज़ला ने अमन वाला शहर घोषित किया गोला-तोप का प्रबन्ध कर के कअबा शरीफ पर पत्थर बरसाए।

करबला के मैदान में अहले-बैत किराम पर 3 दिन तक पानी बंद करवा दिया। इन उच्च ज़ात का निरादर व असम्मान करवाया, नबूवत के परिवार पर अत्याचार का पहाड़ ढ़ाये। अहले-बैत किराम तथा इन के जान-निसारों को यहाँ तक के शहीदों के सरदार हज़रत सैयदना इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को शहीद करवाया।

www.Ziaislamic.com

हमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की हत्या का यज़ीद ने आदेश दिया! इब्न ज़ियाद का स्वीकृति वर्णन

जैसा के इब्न ज़ियाद खुद ही ने स्वीकार किया के यज़ीद ने उसे हज़रत सैयदना इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को शहीद करने का आदेश दिया वरना खुद उसे हत्या करने की धमकी दी थी जैसा अल्लामा इब्न असीर अल तारीक़ अल कामिल में इब्न ज़ियाद का कथन व्याख्या करते हैः-

भाषांतरः अब रहा इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को मेरा शहीद करना तो बात वास्तव में ये है के यज़ीद ने मुझे इस का आदेश दिया था बसूरत अन्य उस ने मुझे हत्या करने की धमकी दी थी तो मैं ने उन्हें शहीद करने को अपनाया।

(अत तारिक़ अल कामिल, जिल्द 03, पः 474)

इसलामी कानून के अनुसार कोई व्यक्ति किसी को हत्या करे तो खिसासन उसको हत्या कर दिया जाता है परन्तु यज़ीद ने इब्न ज़ियाद, शुमर और अन्य ओहदेदारों से ना खिसास लिया और ना इन को ओहदे से निकालाय गया बल्कि इस पर खुशी का प्रदर्शन किया बाद में हालात के बेक़ाबू होने के भय से सामयिक रूप से राजनीतिक अंदाज़ में रंज व मलाल का प्रदर्शन किया, बल्कि उस बदबक़्त ने इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के धन्य दंदान (दाँतों) को जहाँ हबीब पाक

सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम चूमा करते थे अपनी अपवित्र छड़ी से कचोके दिए।

यज़ीद ने इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के धन्य दाँतों को कचोके दिए

जैसा के अल्लामा इब्न कसीर ने हिदायह वन निहायह में अल्लामा इब्न असीर ने तारीक़ अल कामिल में तथा अल्लामा तबरी ने तारीक़ तबरी में लिखा हैः-

भाषांतरः अबु मिक़नफ ने अबु हमज़ा सुमाली से वर्णित की है उन्हों ने अब्दुल्लाह यमानी से वर्णित की है उन्हों ने खासिम बिन बुक़ैत से वर्णित की है उन्हों ने कहाः जब इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का पवित्र सर यज़ीद के सामने रखा गया, उस के हाथ में एक छड़ी थी जिस से वह आप के सामने के धन्य दाँतों को कचोके देने लगा फिर उस ने कहा निश्चय उन की और हमारी मिसाल यही है जैसा के हुसैन बिन हसम्मान मुर्री (कवि) ने कहाः हमारी तलवारें ऐसे लोगों की खोपड़ियाँ फोड़ती हैं जो हम पर शक्ति व प्रभाव रखते थे तथा जो अत्यधिक अत्याचारी व अवज्ञाकारी थे।

हज़रत अबु बरज़ह असलमी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फरमायाः सुल ले अए यज़ीद क़सम खुदा की! तेरी छड़ी इस स्थान पर लग रही है जहाँ मैं ने रसूलउल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम को चूमते हुए देखा है। फिर फरमायाः सावधान होजा! अए यज़ीद! क़ियामत के दिन इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु

तआला अन्हु इस शान व प्रतिभा से आएँगे के उन के शपीअ हज़रत मुहम्मद मुसतफा सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम होंगे तथा तू इस प्रकार आएगा के तेरा तरफदार इब्न ज़ियाद होगा।

(बिदायह वन निहायह, जिल्द 08, पः 209 / तारीक़ अल कामिल, जिल्द 03, पः 437-439)

अधिक बिदायह वन निहायह, जिल्द 08, पः 215 पर इसी घटना से संबंधित उपर्युक्त वर्णन रिवायत के अंत में इस प्रकार व्याख्या हैः-

भाषांतरः उस समय यज़ीद से अबु बरज़ह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फरमाया अपनी छड़ी को हटाले क़सम खुदा की, मैं ने अधिकतर रसूल पाक सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम को अपना धन्य मुँह इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के धन्य मुँह पर रख कर चूमते हुए देखा है।

हमें ज़र होने लगा के कहीं आसमान से पत्थर ना बरसाए जाएँ

शहीदों के सरदार हज़रत सैयदना इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की शहादत की घटना के कारण से मदीना वाले यज़ीद के सख्त विरोधी हो गए तथा सहाबी इब्न सहाबी हज़रत अब्दुल्लाह बिन हंज़ला रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के धन्य हाथों पर बैअत कर लिए तो यज़ीद ने एक सेना मदीने पाक पर आक्रमण के

लिए रवाना किया जिस ने मदीने वालों पर आक्रमण किया तथा उस के सम्मान व आदर को पामाल किया, इस अवसर पर हज़रत अब्दुल्लाह बिन हंज़ला रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने मदीने वालों से खिताब किया इस में यज़ीद की इसलाम के विरुद्ध आदतें व रीति-रिवाज का वर्णन किया जैसा के मुहम्मद बिन सआद रहमतुल्लाहि अलैह (जन्मः 168 हिज्री, देहान्तः 230 हिज्री) की तबखाते-कुबरा, जिल्द 05, पः 66 में इस का विस्तार उपलब्ध हैः-

भाषांतरः मदीने वाले हज़रत अब्दुल्लाह बिन हंज़ला रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से बैअत करने पर निश्चय हो गए तथा अपने मामले को आपके हवाले कर दिया तथा आप ने इन से आखरी दम तक मुक़ाबला करने की बैअत ली तथा फरमायाः अए मेरी क़ौम! अल्लाह तआला से ड़रो जिस का कोई शरीक नहीं, अल्लाह तआला की क़सम! हम यज़ीद के विरुद्ध उस समय उठ खड़े हुए जब के हमें ख़ौफ़ हुआ के कहीं हम पर आसमान से पत्थरों की वर्षा ना हो जाए, वह ऐसा व्यक्ति है जो माओं, बेटियों और बहनों से विवाह जायज़ घोषित देता है। शराब पिया करता है और नमाज़ छोड़ता है, अल्लाह तआला की क़सम! यदि लोगों में से कोई मेरे साथ ना हो तब भी मैं अल्लाह तआला के लिए इस मामले में वीरता व बहादुरी के जौहर दिखाउँगा।

हम ऐसे व्यक्ति के पास से आए जिसका कोई धर्म नहीं

अल्लामा अबु जरीर अल तबररी ने तारीक़ तबरी, जिल्द 01, पः 403 में लिखा हैः-

भाषांतरः उन्हों ने (अहले मदीने के प्रत्यायोजन यज़ीद के पास से वापस आ कर मदीने वालों से) कहाः हम ऐसे व्यक्ति के पास से आए हैं जिस का कोई धर्म नहीं, वह शराब पीता है, तंबूरे (चंग व सफ) बजाता है, उस के पास गाने वाली औरतें नाचती हैं, वह कुत्तों से खेलता है, तथा चोरों तथा छोकरों के साथ रात में कहानियाँ सुनाता है। अए लोगो! हम तुम्हें गवाह बनाते हैं के हम ने यज़ीद की बैअत तोड़दी फिर सम्पूर्ण मदीने वालों ने बैअत तोड़दी, लोग हज़रत अब्दुल्लाह बिन हंज़ला रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के पास आए तथा आप से बैअत किए, इसी प्रकार अत तारीक़ अल कामिल, जिल्द 03, पः 449 में भी है।

अल्लामा इब्न असीर (जन्मः 555 हिज्री, देहान्तः 630 हिज्री) की अत तारीक़ अल कामिल जिल्द 03, पः 337 के वर्णन में हैः-

भाषांतरः महान ताबाई हज़रत हसन बसरी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु यज़ीद के बारे में फरमाते हैं वह अत्यन्त बुरे दर्जे का नशेबाज़ (पियक्कड़ व मद्यसारी) शराब नोशी का आदी था रेशम पहनता तथा तंबूरे बजाता।

वह शराब का इस प्रकार आदी था के हज्ज की यात्रा में जब मदीने पाक पहुँचा तब भी अपनी ये दुष्टतर आदत छोड़ा नहीं तथा शराब-नोशी करने लगा। अत तारीक़ अल कामिल, जिल्द 03, पः 465 में हैः-

भाषांतरः यज़ीद अपने पिता के जीवन में हज्ज किया जब मदीने पाक पहुँचा तो शराब-नोशी करने लगा।

मदीने वालों पर अत्याचार की हद पार करदी

अल्लामा इब्न कसीर (जन्मः 700 हिज्री, देहान्तः 774 हिज्री) ने बिदायह वन निहायह, जिल्द 06, पः 262 में लिखा हैः-

भाषांतरः *हर्रा* की घटना के कारण ये हुआ के मदीने वालों का प्रतिनिधित्व दमिश्क में यज़ीद के पास गया, जब प्रतिनिधित्व वापस हुआ तो इस ने अपने घर वालों से यज़ीद की शराब-नोशी और अन्य बुरी आदतों तथा दुष्टतर गुणों का वर्णन किया जिन में सब से दुष्टतर आदत ये है के वह नशे के कारण से नमाज़ को छोड़ देता था, इस कारण से मदीने वालों की बैअत तोड़ने पर निश्चय हो गए एवं उन्हों ने मिम्बरे-नबवी (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) के पास यज़ीद का पालन ना करने की घोषणा की। जब ये बात यज़ीद को मालूम हुआ तो उस ने मदीने पाक की ओर एक सेना रवाना की जिस का सेनापति एक व्यक्ति था जिस को मुसलिम बिन उखबा कहा जाता है, धर्मनिष्ठ पूर्वजों ने इस को मुसरिफ बिन उखबा कहा है जब वह मदीने पाक में प्रवेश हुआ तो सेना के लिए 3 दिन तक मदीने वालों के जान व माल सब कुछ मुबाह घोषित दिया अर्थात उस ने इन 3 दिन के दौरान सैंकड़ों लोगों को शहीद करवाया।

www.Ziaislamic.com

इमाम बैहखी (जन्मः 384 हिज्री, देहान्तः 458 हिज्री) की दलाईल उन नबूवह में रिवायत हैः-

भाषांतरः हज़रत मुग़ीरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से वर्णित है फरमाते हैं- मुसरिफ बिन उखबा ने मदीने पाक में 3 दिन तक लूट-मार की तथा 1000 पवित्र, बिन ब्याही इसलाम की बेटियों का बलात्कार किया गया। *अलअयाज़बिल्ला*

तबखात अल कुबरा, जिल्द 05, पः 66 में है मुसलिम बिन उखबा ने मदीने पर अपनी से के साथ आक्रमण किया, यज़ीदी सेना ने मदीने पाक में 700 खुर्रा को शहीद किया, 1000 बिन-ब्याही इस्लाम की महिलाओं का बलात्कार किया, मसजिद नबवी में 3 दिन तक अज़ान और जमात रोक दी गई।

जिस ने मदीने वालों को भयभीत किया उस पर अल्लाह की लानत

यज़ीद ने मदीने पाक में विनाशक करवाया, खुले रूप से हत्या करवाई, जब के मदीने वालों को केवल भयभीत करने वाले के लिए हदीस पाक में सख्त चेतावनी आई है मुसनद अहमद में हदीस पाक हैः-

भाषांतरः हज़रत सैयदना साईब बिन खल्लाद रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से वर्णित है के रसूलउल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने आदेश किया जिस ने मदीने वालों को अत्याचार करते हुए भयभीत किया अल्लाह तआला इस को

भयभीत करेगा तथा उस पर अल्लाह तआला की, फरिश्तों की और सम्पूर्ण लोगों की लानत है। अल्लाह तआला उस से क़ियामत के दिन कोई फर्ज़ या नफ्ल अमल स्वीकार नहीं करेगा।

(मुसनद अहमद, हदीस संख्याः 15962 / तारीक़ उल खुलाफा, पः 167)

इस से अंदाज़ा लगाया जा सकता है के उस व्यक्ति का क्य परिणाम होगा जो मदीने वालों को भयभीत व आतंकित ही नहीं किया बल्कि मदीने में रक्तरंजित हत्या व वध किया तथा सारी सेना के लिए अन्ध्यात्मवाद (वेहशियाना) कर्म की आज्ञा दे दी।

यज़ीदी सेना ने बैतुल्लाह पर संघबारी की

पश्चात् यज़ीद ने उसे मक्के में कअबे शरीफ पर आक्रमण करने का आदेश दिया अर्थात यज़ीदी सेना ने कअबा शरीफ पर आक्रमण करने के लिए क़ैमे बना कर पत्थर बरसाए जिस के कारण से कअबे शरीफ के परदे को आग लग गई।

अत तारीक़ अल कामिल, जिल्द 03, पः 464 में हैः-

भाषांतरः यहाँ तक के जब 64 हिज्री रब्बीअ उल अव्वल के 3 दिन बीत गए उन लोगों ने क़ैमों के द्वारा कअबे शरीफ पर संघबारी की। उसे जलाया तथा गाने लगे। हम सर्वश्रेष्ठ शक्तिशाली तथा बहादुरी रखते हैं, क़ैमों से उस मसजिद पर संघबारी करते हैं।

अखीदे की फन में मदरसों में पढ़ाई जाने वाली नामवर पुस्तक *शरह अखाईद नसफी* में 117 अल्लामा सअदउद्दीन नफ्ताज़ानी रहमतुल्लाहि अलैह ने लिखा हैः-

भाषांतरः कुछ इमाम लोगों ने इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को शहीद करने का आदेश देने के कारण से कुफ्र के अपराधी घोषित दे कर यज़ीद पर लानत को जायज़ रखा है। उम्मत के विद्वानों ने इस व्यक्ति पर लानत करने के निश्चय रूप से खाइल हैं जिस ने इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को शहीद किया या शहीद करने का आदेश दिया या उसे जायज़ समझा तथा इस पर खुश हुआ, सत्य ये है के इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की शहादत पर यज़ीद का संतुष्ट होना, इस से खुश होना तथा अहले-बैत किराम का निरादर करना इन रिवायतों से साबित है जो अर्थकारी रूप से मुतवातिर के दर्जे में है अगरचे इसकी तफसीलात व विस्तार सूचना से साबित हैं अर्थात हम यज़ीद के बारे में विश्वास नहीं कर सकते बल्कि इस के ईमान के बारे में विश्वास करेंगे इस पर और इसके मददगारों पर अल्लाह की लानत हो।

यज़ीद को रज़ियल्लाहु तआला अन्हु केहने की शरई आदेश

रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के कलिमात अल्लाह तआला की संतुष्टि व रज़ा एवं प्रसन्नता के वर्णन व प्रकट के लिए हैं जो सम्मान व आदर के प्रति में प्रशंसा व तारीफ के उद्देश्य से वर्णन किए जाते हैं।

एवं *रज़ियल्लाहु तआला अन्हु* रके कलिमात विशेष रूप से सहाबा किराम व अधिक उच्च ज़ात के लिए उपयोग किए जाते हैं जिन के दिल अल्लाह तआला के ख़ौफ व भय से भरे हों जैसा के अल्लाह तआला का आदेश हैः-

भाषांतरः- अल्लाह इन से संतुष्ट हुआ और वह अल्लाह से संतुष्ट हैं। ये इन के लिए है जो अपने रब से ड़रते हों।

(सुरह अल अंबियाः 08)

हज़रत नबी अकरम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम ने क़यामत तक घटित होने वाले सम्पूर्ण फितनों की विस्तार वर्णन किए। पूर्ण हज़रत नबी अकरम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम ने यज़ीद के फितनों से भी समुदाय को सचेत किया इस सिलसिले में एक से अधिक हदीसें आधार हैं।

कुछ रिवायतों में इशारे से वर्णन हैं और कुछ में स्पष्ट रूप से समुदाय में सब से प्रथम फसाद फैलाने वाला, सुन्नतों को व्यर्थ करने वाला, धर्म में अंतर ड़ालने वाले , बनी उमैया का एक यज़ीद नामी व्यक्ति होगा। तीसरे सदी हिज्री के माननीय

मुहद्दिस इमाम अबु यअ़ला रहमतुल्लाहि अलैह (जन्मः 211, देहान्तः 307 हिज्री) ने अपनी मुसनद में सनद के साथ हदीस पाक रिवायत की है।

भाषांतरः- हज़रत सैयदना अबु उबैदह बिन जुर्राह रज़ियल्लाहु तअ़ाला अन्हु से वर्णित है हज़रत रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु तअ़ाला अलैहि वसल्लम ने आदेश फरमायाः मेरी उम्मत का मामला न्याय के साथ स्थापित रहेगा यहाँ तक के सब से प्रथम इस में अंतर ड़ालने वाला बनी उ़मैयह का एक व्यक्ति होगा जिस को यज़ीद कहा जाएगा।

(मुसनद अबु यअ़ला, मुसनद अबु उ़बैदह रज़ियल्लाहु तअ़ाला अन्हु)

अधिक नामवर व्याख्याता व अनुवादक अबु अल फिदा इसमाइ़ल बिन उ़मर, नामवर इब्न कसीर (जन्मः 700 हिज्री, देहान्तः 774 हिज्री) ने अपनी पुस्तक अ हिदायह वन निहायह, जिल्द 6, पः 256 में इस हदीस पाक को व्याख्या किया है।

इस हदीस को मुहद्दिस कबीर इमाम शहाब उद्दीन अहमद बिन हज्र मक्की हैतमी रहमतुल्लाहि अलैह ने भी अल सवाअ़ख अल महरखह पः 132 में व्याख्या किया है। आप ने इस सिलसिले में अधिक एक रिवायत अल सवा अ़ख महरखह पः 132 में वर्णन किया है।

www.Ziaislamic.com

भाषांतरः- हज़रत सैयदना अबु अल दरदा रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु से वर्णित है इन्हों ने फरमाया मैं ने हज़रत नबी अकरम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम को फरमाते हुए सुनाः सब से प्रथम जो मेरी सुन्नत को बदलेगा बनु उमैयह का एक व्यक्ति होगा जिस को यज़ीद कहा जाएगा। इस हदीस पाक को अल्लामा इब्न कसीर ने भी हज़रत अबु ज़र ग़िफारी रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु की रिवायत से व्याख्या किया।

सहीह बुखारी जिल्द 2, पः 1046 में हदीस पाक हैः-

भाषांतरः- अम्र बिन यहया बिन सईद बिन अम्र बिन सईद अपने दादा अम्र बिन सईद रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु से वर्णित करते हैं उन्हों ने फरमायाः मैं ने मदीने में हज़रत नबी अकरम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम की मसजिद शरीफ में हज़रत अबु हुरैरह रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु के साथ बैठा हुआ था तथा मरवान भी हमारे साथ था। हज़रत अबु हुरैरह रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु ने फरमायाः मैं ने हज़रत सादिख मसदूख सरकार पाक सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम को आदेश फरमाते हुए सुनाः मेरी उम्मत की हलाकत खुरैश के चंद लड़कों के हाथों से होगी मरवान ने का अल्लाह तआ़ला ऐसे लड़को पर लान करे। हज़रत अबु हुरैरह रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु ने फरमायाः यदि मैं कहना चाहुँ के वह बनी फलां और बनी फलां हैं तो कह सकता हूँ। हज़रत उमरा बिन यही कहते हैं मैं अपने दादा के साथ बनी मरवान के पास गया जब के वह सीरिया देश के राज्यपाल थे पस इन्हीं कम उमर लडके पाय तो हम से फरमायाः शीघ्र ये लडके इन ही में से होंगे। हम ने कहाः आप उचित जानते हैं।

www.Ziaislamic.com

बुखारी शरीफ के अनुवादक फत्हुल बारी हाफिज़ अहमद बिन हजर असखलानी रहमतुल्लाहि अलैह (जन्मः 773, देहान्तः 852 हिज्री) वर्णन हदीस पाक की शरह में मुसन्नफ इब्न अबी शैबा के हवाले से हज़रत अबु हुरैरह रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु की एक रिवायत व्याख्या करते हुए लिखते हैः-

भाषांतरः- मुसन्नफ इब्न अबी शैबा की रिवायत में है के सैयदना अबु हुरैरह रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु बाज़ार में चते हुए भीये दुआ करतेः अए अल्लाह! सुन 60 हिज्री और लडकों की प्रशासन व संचालन मुझ तक ना पहुंचे।

इस रिवायत में इस बात की ओर इशारा है के प्रथम लड़का जो राज्यपाल बनेगा वह 60 हिज्री में होगा अर्थात ऐसा ही हुआ के यज़ीद बिन मआ़विया इसी वर्ष संचालन के आसन पर स्थापित हुआ और 64 हिज्री तक रह कर हलाक हुआ।

शहीदों के सरदार इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु की शहादत के घटना, जांकाह के कारण से मदीने वाले यज़ीद के कठिन विरोधी होगए और सहाबी इब्न सहाबी हज़रत अबदुल्लाह बिन हंज़ला रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु के मुबारक हाथ पर बैअ़त कर लिए तो कुटील यज़ीद ने एक सेना महीने पर चढाई के लिए रवाना की जिस ने मदीने वालों पर आक्रमण किया और इस के सम्मान व आदर व मर्यादा को चोट पहुंचाया इस अवसर पर हज़रत अबदुल्लाह बिन हंज़ला रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु ने मदीने वालों सो रूह परूर खिताब किया और इस में यज़ीद के आदतों व व्यवहार जो इसलाम के विरुद्ध थे उनका वर्णन किया जैसा के समय के

www.Ziaislamic.com

मुहद्दिस मुहम्मद बिन सअ़द रहमतुल्लाहि अलैह (जन्मः 168, देहान्तः 230 हिज्री) की तबखात कुबरा जिल्द 5, पः 66 में इस की विस्तार उपलब्ध है।

हज़रत अबदुल्लाह बिन हंज़ला रज़ियल्लाहु तअ़ाला अन्हु ने मदीने वालों से अंत सांस तक सामना करने की बैअ़त ली और फरमायाः अए मेरी क़ौम! अल्लाह तअ़ाला से ड़रो जिस का कोई शरीक नहीं, अल्लाह का वचन! हम यज़ीद के विरुद्ध इस समय आड़ खड़े हुए जबके हमें खौफ हुआ के कहीं हम पर आकाश से पथरों की वर्षा ना हो जाए।

वह ऐसा व्यक्ति है जो मांओं, बेटियों और बहनों से विवाह जाइज़ घोषित किया है। शराब पीता है, नमाज़ छोड़ देता है, अल्लाह का वचन! यदि लोगों में से कोई मेरे साथ ना हो तब भी मैं अल्लाह के लिए इस मामले में वीरता व साहस के भूषण दिखाउँगा।

अल्लामा इब्न असीर (जन्मः 555 हिज्री, देहान्तः 630 हिज्री) के तारीख सम्पूर्ण 51 हिज्री के वर्णन में है।

हज़रत हसन बसरी रज़ियल्लाहु तअ़ाला अन्हु यज़ीद के बारे में फरमाते हैं वह अत्यन्त नशेबाज़ (मद्यसारी), शराब पीने का आदी था, रेशम पहनता और तंबूरे बजाता।

www.Ziaislamic.com

अल्लामा इब्न कसीर (जन्मः 700, देहान्तः 774 हिज्री) ने अल हिदायह वन निहायह, जिल्द 6, पः 262 में लिखा हैः-

भाषांतरः- हरह की घटना का कारण यह हुआ के मदीने वालों का वफद डमास्कस में यज़ीद के पास गया। जब वफद वापस हुआ तो इस ने अपने घर वालों से यज़ीद की शराब नोशी और अन्य बुरी आदतों और दुष्ट गुण का वर्णन किया जिन में सब से दुष्ट आदत ये है के वह नशा के कारण से नमाज़ को चोड देता था। इस कारण से मदीने वाले यज़ीद की बैअत तोड़ने पर संगठित हो गए और इन्हों ने मिम्बर नबवी अ़ला साहिबी सल्लल्लाहु तअ़ाला अलैहि वसल्लम के पास यज़ीद के पालन ना करने की घोषणा की। जब ये बात यज़ीद को मालूम हुई तो इस ने मदीने की ओर एक सेना रवाना किया जिस का मुखिया एक व्यक्ति था जिस को मुसलिम बिन उखबा कहा जाता है सलफ सालेहीन ने इस को मुलर्रिफइब्न उखबा कहा है जब वह मदीने में प्रवेश हुआ तो सेना के लिए 3 दिन तक मदीने वालों के जान व माल सब कुछ मुबाह घोषित किया। अर्थात इस ने इन 3 दिन को दौरान सैंकड़ों लोगों को शहीद करवाया।

इमाम बैहखी (जन्मः 384, देहान्तः 458 हिज्री) की दलाइ़ल नबूवह में रिवायत हैः-

भाषांतरः- हज़रत मुग़ैरह रज़ियल्लाहु तअ़ाला अन्हु से वर्णित है फरमाते हैं मुसर्रिफ बिन उखबा ने मदीने में 3दिन तक लूटमार की और एक 1000 इज्जतदार बिन

www.Ziaislamic.com

ब्याही और शालीन इसलाम के बेटियों का बलात्कार किया। अल्लाह हमें इस से सुरक्षित रखे।

जबके मदीने वालों को ड़राने के लिए हदीस में कठिन चेतावनी आई है मुसनद अहमद, मुसनद अल मदनैयिन में हदीस पाक हैः-

भाषांतरः- हज़रत सैयदना साईब बिन खुलादर रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु से वर्णित है के हज़रत रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम ने आदेश फरमाया जिस ने मदीने वालों को अत्याचार करते हुए ड़राया अल्लाह तआ़ला इस को भयभीत करेगा और इस पर अल्लाह की, फरिश्तों की और सम्पूर्ण लोगों की लानत है। अल्लाह तआ़ला इस से क़यामत के दिन कोई फर्ज़ या नफ्ल कर्म स्वीकार नहीं करेगा।

(हदीस संख्याः 15962) इस से अंदाज़ा जा सकता है इस व्यक्ति का क्या परिणाम होगा जो मदीने वालों को केवल भयभीत हिरासां ही नहीं किया बल्कि मदने में हत्या व क़त्ल किया और सारी सेना के लिए दरिंदगी कर्म की आज्ञा देदी।

फन अखीदह में पड़ाई जाने वाली दर्से-निज़ामी की नामवर पुस्तक शरह अखीदे नसफी, प 117 में अल्लामा सअ़द उद्दीन तफताज़ानी रहमतुल्लाहि अलैह ने लिखा हैः-

www.Ziaislamic.com

भाषांतरः- कुछ इमाम ने इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु को शहीद करने का आदेश देने के कारण से कुफ्र के अपराधी घोषित देकर याज़ीद पर लानत को जाइज़ रखा है। समुदाय के विद्वान इस व्यक्ति पर लानत करने के संयोग से खाइल हैं जिस ने इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु को शहीद किया या शहीद करने का आदेश दिया या इसे जाइज़ समझा और इस पर खुश हुआ।

सत्य ये है के इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु की शहादत पर यज़ीद का सन्तुष्ट होना इस से खुश होना और अहले बैत किराम की तौहीन करना इन रिवायत से साबित है जो अर्थ के रूप से मुतवातिर के स्तर में हैं अगरचे इसका विस्तार प्रथम सूचना से साबित है।

अर्थात हम यज़ीद के बारे में भरोसा नहीं कर सकते बल्कि इस के इमान के बारे में भरोसा करेंगे इस पर और इसके मददगारों पर अल्लाह तआ़ला की लानत हो। हज़रत शेखुल इसलाम आरिफ बिल्लाह इमाम मुहम्मद अनवारुल्लाह फारूखी रहमतुल्लाहि अलैह यज़ीद के बारे में अपनी पुस्तक मखासिदुल इसलाम भागः 05 में पः 50 में लिखते हैः-

“मालूम नहीं दुष्ट किस प्रकार का आपति में पड़ा हुआ है और इस आलम में इस पर क्या-क्या गुज़र रही है?”

रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु के कथन अल्लाह तआ़ला की संतुष्टि व प्रसन्नता के वर्णन व प्रदर्शन के लिए हैं जो सम्मान व आदर के महल में प्रशंसा के उद्देश्य से वर्णन किए जाते हैं और रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु के कथन विशेष रूप से सहाबा किराम के लिए अधिक इन पावन लोगों के लिए जिन के हृदय व मन अल्लाह के खौफ से भरे हुए हों उपयोग किए जाते हैं जैसा के अल्लाह तआ़ला का आदेश हैः-

भाषांतरः- अल्लाह इन से संतुष्ट हुआ और वह अल्लाह से संतुष्ट हैं। ये इन के लिए है जो अपने रब से ड़रते हों।

(सुरह अल अंबियाः 08)

उपर्युक्त हदीसों और ज्ञानी विद्वानों के निबंध से ये विषय उजागर हुआ के यज़ीद दुष्ट, फासिख व फाजिर, फितने फैलाने वाला बिदअ़ती, सुन्नत को बदलने वाला, धर्म में असमानता ड़ालने वाला, हरमैन शरीफैन के सम्मान को व्यर्थ करने वाला, अहले बैत का निरादर व असम्मान करने वाला है। ऐसे व्यक्ति के लिए रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु व अमीरुल मोमिनीन के शब्द उपयोग करना वास्तव में इस को सम्मान व आदर देना है और ये इसलाम को ढ़ाने में मदद करने के मुतदआदिफ है जो क्रोध व विपत्ति व हलाकत के योग्य, शफाअ़त से वंचित और गुमराही है। रसूल अकरम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम ने फासिख व फाजिर का सम्मान करने को इसलाम ढ़ाने में मदद करना घोषित दिया है।

www.Ziaislamic.com

हज़रत आयशा सिद्दीखा रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हा से वर्णित है हज़रत रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम ने आदेश फरमाया जिस ने किसी बिदअ़ती का सम्मान किया निश्चय इस ने इसलाम को धर्म बरबाद करने में मदद किया।

(मुअ़जम औसत लित तबरानी (जन्मः 260 हिज्री, देहान्तः 360 हिज्री) हदीस संख्याः 6263)

इमाम बैहखी (जन्मः 384 हिज्री, देहान्तः 458 हिज्री) की शुअ़बुल इमान में हदीस पाक हैः-

भाषांतरः- हज़रत सैयदना अनस रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु से वर्णित है हज़रत रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम ने आदेश फरमायाः जब फासिख की प्रशंसा की जाती है तो पालनहार का जलाल प्रकट होता है और इस के कारण से अर्श लरज़ता है।

(शुअ़बुल इमान, हदीस संख्याः 4692)

यज़ीद की ओर अमीरुल मोमिनीन कहने वाले को बनी उमैया के खलीफ आदिल हज़रत उमर बिन अबदुल अज़ीज़ रहमतुल्लाहि अलैह ने निरादर के योग्य घोषित

किया है जैसा के फन रिजाल की मुसतनद पुस्तक तहज़ीब अलतहज़ीब, जिल्द 11, पः 316 में हाफिज़ इब्न हजर अ़सखलानी रहमतुल्लाहि अलैह ने लिखा हैः-

नौफल बिन अबु अ़खरब फरमाते हैं, मैं हज़रत उ़मर बिन अबदुल अ़ज़ीज़ रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु की सेवा में था एक व्यक्ति ने यज़ीद का वर्णन करते हुए कहा के अमीरुल मोमिनीन यज़ीद ने युं कहा है, हज़रत उ़मर बिन अबदुल अ़ज़ीज़ रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु ने फरमायाः तू यज़ीद को अमीरुल मोमिनीन कहता है, फिर इस व्यक्ति को कोड़े लगवाने का आदेश दिया। अर्थात इसे 20 कोड़े लगवाए गए।

(अत तहज़ीब उत तहज़ीब, जिल्द 11, पः 316 / तारीक़ उल खुलफा, पः 166 / अस सवाईख उल मुहरिखा, पः 132)

बुखारी शरीफ के अनुवादक हज़रत इमाम बद्रउद्दीन ऐनी रहमतुल्लाहि अलैह (देहान्तः 855 हिज्री) (मेरी उम्मत की हलाकत खुरैश के कुछ लड़कों के हाथों से होगी) के विस्तार व अनुवाद करते हुए फरमाते हैं के-

भाषांतरः यज़ीद इन में सब से प्रथम लड़का है तथा उसके नाम के साथ ये शब्द लिखा है *उसका वही योग्य है* इन में सब से प्रथम यज़ीद है उस पर वही है जिसका वह योग्य है।

www.Ziaislamic.com

हदीस मदीने खैसर की तहक़ीक़ी बहस

यज़ीद के बारे में कहा जाता है के वह खैसर के शहर क़ुस्तुनतुनिया पर हमला करने वाले प्रथम सेना में शरीक था अर्थात वह हदीस पाक के अनुसार मग़फिरत योग्य तथा बख्शा हुआ है। इस बात को साबित करने के लिए सहीह बुखारी की हदीस पाक से दलील किया जाता है।

उपर्युक्त वर्णन उसकी ज्ञानी व तहक़ीक़ी बहस लिखी जाती है

सहीह बुखारी, जिल्द 01, पः 409-410 में हदीस पाक हैः-

भाषांतरः हज़रत उम्मे हराम रज़ियल्लाहु तआला अन्हा से वर्णित है के उन्हों ने हज़रत नबी अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम को आदेश करते हुए सुनाः मेरी उम्मत की जो प्रथम सेना बुर्राह समंदर जिहाद करे उस ने जन्नत को वाजिब कर लिया हज़रत उम्मे हराम रज़ियल्लाहु तआला अन्हा ने निवेदन कियाः या रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम! क्या मैं इन में शामिल हुँ? आप ने फरमायाः तुम इन में शामिल हो, हज़रत उम्मे हराम रज़ियल्लाहु तआला अन्हा केहती हैं फिर नबी अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने आदेश कियाः मेरी उम्मत की जो प्रथम सेना खैसर के शहर पर आक्रमण करेगा वह बख्शा हुआ है। मैं ने विनती कीः क्या मैं इन में शामिल हों या रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम! तो आप ने आदेश कियाः नहीं।

www.Ziaislamic.com

(सहीह बुखारी, जिल्द 01, पः 409-410, हदीस संख्याः 2924 / मुसतदरक अला सहिहैन, हदीस संख्याः 8818 / दलाईल उल नुबुव्वह, हदीस संख्याः 2780 / मुअजम कबीर लित तबरानी, हदीस संख्याः 20831 / मुसनद शमियीन लित तबरानी, हदीस संख्याः 432 / शरह सुन्नाह, जिल्द 01, पः 881)

हदीस के संकलन, हदीसों के समीक्षा तथा इतिहास के पुस्तकों में सच्चाई के साथ बहस व तहक़ीक़ की जाए तथा उम्मत के इमामों की स्पष्टीकरण व विस्तार का मुताला किया जाए तो इस की दलील का उजागर हो जाएगा, उपर्युक्त वर्णन हदीस से दलील करते हुए मग़फिरत की शुभ-सूचना में यज़ीद को शरीक मान कर उस को बख्शा हुआ केहना कई एक वुजूद के बिना पर सहीह नहीं।

हदीस की प्रथम निर्वचन

इस सिलसिले में मुहद्दिसीन ने हदीस वर्णन की एक निर्वचन ये वर्णन किया है के उपर्युक्त वर्णन हदीस में मदीने खैसर से तात्पर्य क़ुस्तुनतुनिया नहीं बल्कि हिम्स है जो सरकार के धन्य ज़माने में रूम का राजधानी थी जैसा के फत्हुल बारी में हदीस पाक की शरह के प्रति इस की एक निर्वचन ये भी वर्णन किया गया हैः-

www.Ziaislamic.com

कुछ अनुवादकों ने कहा है के मदीने खैसर से तात्पर्य वह शहर है जो नबी अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के धन्य ज़माने में खैसर का शहर था वह हिम्स है और उस समय वही उसकी राजधानी थी।

(फत्हुल बारी, किताब उल जिहाद)

ये विवेचना व स्पष्टीकरण इस लिए भी ध्यान के योग्य है के बुखारी शरीफ तथा उपर्युक्त वर्णन सम्पूर्ण हदीस पाक की रिवायत में क़ुस्तुनतुनिया का शब्द वर्णन नहीं है बल्कि *मदीने खैसर* के शब्द वर्णन है। खैसर, रूम के राजा का उपपद था, वह जिस शहर में रेहना तथा जो उस की राजधानी थी वही मदीने खैसर का उल्लिखित होगा, हदीस पाक कलिमात के अनुसार वह शहर हिम्स ही है, हज़रत उमर की खिलाफत में 15 हिज्री में हज़रत अबु उबैदह बिन जर्रह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की नियन्त्रित (समादेश) एक सेना हिम्स पर आक्रमण किया, इसलाम जाति ने कठिन सरदी के मौसम में हिम्स का घेराबंदी की और सरदी के मौसम के अंत पर इस को पराजित कर लिया इस युद्ध में हज़रत खालिद बिन वलीद रज़ियल्लाहु तआला अन्हु, हज़रत बिलाल रज़ियल्लाहु तआला अन्हु, हज़रत मिखदाद रज़ियल्लाहु तआला अन्हु और अन्य सहाबा किराम शरीक रहे।

अल्लामा इब्न असीर (जन्मः 555 हिज्री, देहान्तः 630 हिज्री) ने अत तारीक़ अल कामिल, जिल्द 02, पः 339 15 हिज्री के घटना में वर्णन किया हैः-

www.Ziaislamic.com

भाषांतरः हज़रत अभु उबैदह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु जब दमिश्क के युद्ध से मुक्त हुए तो बअलबक स्थान के रास्ते से हिम्स की ओर चले।

ये वह ज़माना है के यज़ीद पैदा नहीं हुआ था, उस का युद्ध में शरीक होना तो दूर की बात क्यों यज़ीद की पैदाईश 26 हिज्री में हुई। जैसा के अल्लामा इब्न कसीर (जन्मः 700 हिज्री / देहान्तः 774 हिज्री) की अल बिदायह वन निहायह, जिल्द 09 पः 76 में हैः-

भाषांतरः याज़ीद बिन मआविया की पैदाईश 26 हिज्री में हुई।

इस विवेचना पर एक विरोध आ सकता है के उपर्युक्त वर्णन हदीस में पहले समंदर के युद्ध का वर्णन है जिस में हज़रत उम्मे हराम रज़ियल्लाहु तआला अन्हा शरीक रहीं। इस के बाद मदीने खैसर के युद्ध का वर्णन है। यदि मदीने खैसर से तात्पर्य हिम्स है तो इस का वर्णन ग़ज़वतुल-हज्र से पूर्व आता था जब के हदीस पाक में ऐसा नहीं है।

हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने प्रथम *ग़ज़वतुल हज्र* का वर्णन फरमाया फिर मदीने खैसर के युद्ध का तो याद रहे के घटने की तरतीब कभी वर्णन के अनुसार से होती है और कभी घटना के अनुसार से। अर्थात इस के उत्तर में कहा जाएगा के ये तरतीब वर्णन के अनुसार से है। घटना के घटिनत होने के अनुसार से नहीं।

www.Ziaislamic.com

हदीस की दुसरी निर्वचन

अन्य अनुवादकों ने कहा के हदीस में वर्णन *मदीने खैसर* से तात्पर्य क़ुस्तुनतुनिया है किन्तु यज़ीद हदीस की गवाही का योग्य नहीं घोषित पाता इस लिए के इसलाम जाती ने क़ुस्तुनतुनिया पर कई बार हमला किया तथा हदीस में मग़फिरत की शुभ-सूचना क़ुस्तुनतुनिया पर केवल प्रथम बार हमला करने वाले सेना के लिए है। अब ये तहक़ीक़ व अनुसंधान की जाए के मुसलमानों ने क़ुस्तुनतुनिया पर प्रथम बार किस सन में हमला किया तथा प्रथम सेना कौनसा है?

क़ुस्तुनतुनिया पर प्रथम हमला

क़ुस्तुनतुनिया पर हमला करने वाले सेना से संबंधित बिदायह वन निहायह, जिल्द 07, पः 179 में हैः

भाषांतरः 32 हिज्री में हज़रत अमीर मआविया रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने रोम पर हमला किया, युद्ध पे युद्ध लड़ते रहे यहाँ तक के क़ुस्तुनतुनिया के शहर को पहुँच गए।

अत तारीक़ अल कामिल, जिल्द 03, पः 25 में हैः-

www.Ziaislamic.com

इस से मालूम होता है के क़ुस्तुनतुनिया पर प्रथम बार हज़रत अमीर मआविया रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने हमला किया, इस युद्ध में यज़ीद की शरीक होने का कहीं वर्णन नहीं मिलता। अल हिदायह वन निहायह, जिल्द 09, पः 76 के अनुसार यज़ीद 26 हिज्री में पैदा हुआ, र 32 हिज्री में वह 6 वर्ष का बच्चा था।

क़ुस्तुनतुनिया पर दुसरा हमला

दुसरी बार 43 हिज्री में मुसलमानों ने हज़रत बुस्र बिन अरताह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की नायकत्व में रूम के देशों पर आक्रमण किया तथा रूम में दूर तक निकल गए यहाँ तक के क़ुस्तुनतुनिया तक पहुँचे। अल बिदायह वन निहायह, जिल्द 08, पः 27 में हैः-

भाषांतरः अल्लामा इब्न क़ल्दुन जैसे सूक्ष्म इतिहासकार ने भी इस घटना का वर्णन किया है। तारीक़ इब्न क़ल्दुन, जिल्द 03, पः 09 में है।

भाषांतरः फिर बुस्र बिन अरताह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु 43 हिज्री में रूम वासियों की धरती में प्रवेश हुए, लगातार चलते रहे यहाँ तक के क़ुस्तुनतुनिया पहुँच गए।

क़ुस्तुनतुनिया पर तीसरा हमला

क़ुस्तुनतुनिया पर तीसरा आक्रमण 44 हिज्री या 46 हिज्री में हुआ। अत तारीक़ अल कामिल 44 हिज्री के घटना में हैः-

भाषांतरः 44 हिज्री में मुसलमान हज़रत अब्दुर रहमान बिन खालिद बिन वलीद (रज़ियल्लाहु तआला अन्हु) के साथ रूम में प्रवेश हुए तथा सरदी के मौसम वहीं बिताए एवं बुस्र बिन अबी अरताह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु समंदर के द्वारा युद्ध किए।

(अत तारीक़ अल कामिल, जिल्द 03, पः 298)

इसी पुस्तक में 46 हिज्री से घटना के प्रति हैः-

भाषांतरः 46 हिज्री में हज़रत मालि बिन अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु रूम के देशों में रहे तथा कहा गया बल्कि हज़रत अब्दुर रहमान बिन खालिद बिन वलीद रज़ियल्लाहु तआला अन्हु रहे तथा इसी वर्ष आप हिम्स वापस हुए तथा देहान्त कर गए।

(अत तारीक़ अल कामिल, जिल्द 03, पः 309)

www.Ziaislamic.com

कुस्तुनतुनिया पर आक्रमण करने वाले तीसरी सेना के सेनापति हज़रत अब्दुर रहमान बिन खालिद बिन वलीद रज़ियल्लाहु तआला अन्हु रहे। इस आक्रमण का वर्णन इतिहास के पुस्तकों के अतिरिक्त *सिहा सित्ता* (हदीसों की 6 सब से अधिप्रमाणित व विश्वसनीय पुस्तकें) के प्रमाणित पुस्तक सुनन अबु दाउद, जिल्द 01, किताबुल जिहाद, पः 340 (हदीस संख्याः 2151) में है के मुसलमानों ने कुस्तुनतुनिया पर आक्रमम किया तथा इस युद्ध में हज़रत अब्दुर रहमान बिन खालिद बिन वलीद रज़ियल्लाहु तआला अन्हु सेनापति थे।

भाषांतरः हज़रत अस्लम अबु इमरान रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से वर्णित हैः हम मदीने पाक से कुस्तुनतुनिया पर आक्रमण के उद्देश्य से निकले, सेना के के सेनापति हज़रत अब्दुर रहमान बिन खालिद बिन वलीद रज़ियल्लाहु तआला अन्हु थे, रूमी लोग अपनी पीठ शहर पनाह से लगे हुए थे, एक विरोधी पर आक्रमण करने के लिए मुसल्लह (नियुक्त) हे तो लोगों ने कहाः *ला इलाहा इलल्लाह* ये अपने आप को हलाकत व विनाश में ड़ालते हैं। हज़रत अबु अयुब अन्सारी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फरमायाः ये आयत हम गिरोह अन्सार के बारे में प्रकट की गई थी जब के अल्लाह तआला ने नबी करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की मदद की तथा इसलाम को प्रभावित व ग़ालिब कर दिया तो हम ने कहा के आओ अब अपने धन व जायदाद में रहें तथा उन्हें श्रेष्ठ करें तो अल्लाह तआला ने आदेश प्रकट कियाः “और अल्लाह के मार्ग में खर्च करो तथा अपने हाथों खुद को हलाकत में ना ड़ालो।” (सुरह अल बक़रहः 02:195) अर्थात अपने हाथों अपने आप को हलाकत में ड़ालना ये है के अपने अमवाल में रेह कर उस की इसलाम में व्यस्त हो जाएँ तथा जिहाद को छोड़ दें हज़रत अबु इमरान का वर्णन

है के हज़रत अबु अयुब रज़ियल्लाहु तआला अन्हु हमेशा अल्लाह तआला की राह में जिहाद करते रहे यहाँ तक के क़ुस्तुनतुनिया में आपकी तदफीन हुई।

(सुनन अबु दाउद, जिल्द 01, किताबुल जिहाद, पः 340, हदीस संख्याः 2151)

उपर्युक्त वर्मन विस्तार के अनुसार 32 हिज्री में हज़रत अमीर मआविया रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के प्रति में हमले करने वाला सेना प्रथम घोषित पाता है तथा यही सेना बुखारी शरीफ की हदीस पाक में वर्णन मग़फिरत व मुक्ति की गवाही का योग्य है।

सुनन अबु दाउद की रिवायत से स्पष्ट होता है के क़ुस्तुनतुनिया पर आक्रमण करने वाले सेना के सेनापति हज़रत अब्दुर रहमान बिन खालिद बिन वलीद रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा थे जिन का देहान्त 46 या 47 हिज्री में हुआ, जैसा के तारीक़ अल कामिल में 46 हिज्री के घटना में वर्णन है

(तारीक़ अल कामिल, जिल्द 03, पः 309)

अल बिदायह वन निहायह जिल्द 08, पः 34 में भी आप का देहान्त 46 हिज्री बतलाया गया है। सुनन अबु दाउद सिहा सित्ता (हदीसों की 6 सब से अधिप्रमाणित व विश्वसनीय पुस्तकें) में शुमार होती है उश को स्पष्ट रूप से तारीक़ की पुस्तकों पर तरजीह प्राप्त है।

इस से अनिवार्य रूप से मालूम हुआ के हज़रत अब्दुर रहमान बिन खालिद रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की सरकरदगी में 46 हिज्री या 47 हिज्री से पूर्व क़ुस्तुनतुनिया पर आक्रमण हुआ क्यों के मुसतनद व अधिप्रमाणित इतिहास की पुस्तकों व रिजाल की पुस्तकों से साबित है के हज़रत अब्दुर रहमान बिन खालिद रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का देहान्त 46 हिज्री या 47 हिज्री में हुआ।

(1)- 32 हिज्री। (2)- 43 हिज्री। (3)- 44 हिज्री या 46 हिज्री। इन तीनों हमलों में से किसी हमले में यज़ीद की शिरकत साबित नहीं।

यज़ीद क़ुस्तुनतुनिया के कौनसे युद्ध में शरीक रहा?

हदीस पाक में वर्णन की गई बख्शिश की शुभ-सूचना का योग्य यज़ीद है या नहीं? इस को मालूम करने के लिए ये जानना अवश्य है के यज़ीद क़ुस्तुनतुनिया के कौनसे युद्ध में और किस सन (हिज्री) में शरीक हुआ, इस सिलसिले में चार कथन हैं।

(1)- 49 हिज्री में रूम के युद्ध में शरीक रहा यहाँ तक के क़ुस्तुनतुनिया पहुँच गया जैसा के अल बिदायह वन निहायह, जिल्द 08, पः 36 में हैः-

भाषांतरः 49 हिज्री में यज़ीद बिन मआविया रूम के देश पर आक्रमण और क़ुस्तुनतुनिया तक पहुँच गया।

www.Ziaislamic.com

(2)- यज़ीद 50 हिज्री के आक्रमण में शरीक रहा के उमदतुल खारी, जिल्द 05, पः 558 में हैः-

भाषांतरः 50 हिज्री को मुसलमान इस युद्ध में क़ुस्तुनतुनिया तक पहुँचे तथा इस का मुहासिरा किए जब के यज़ीद बिन मआविया अपने पिता की ओर से उन का सेनापति था।

(3)- 52 हिज्री में क़ुस्तनुतनिया के हमले में शरीक रहा, अल्लामा बद्रउद्दीन ऐनी हनफी रहमतुल्लाहि अलैह ने इस कथन को तरजीह दी तथा कहा के तरजीह के योग्य बात ये है के यज़ीद 52 हिज्री में क़ुस्तुनतुनिया के हमले में शरीक रहा जैसा के उमदतुल खारी, जिल्द 10, किताबुल जिहाद, पः 244 में लिखा है।

(4)- हज़रत मआविया रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने 55 हिज्री में यज़ीद को क़ुस्तुनतुनिया पर आक्रमण के लिए रवाना किया जैसा के अल इसाबा फी माअरिफतिस सहाबह में उल्लेख है।

इन चारो कथन में किसी भी कथन को अधिमत मान लिया जाए तो इस से ये साबित नहीं होता के यज़ीद क़ुस्तुनतुनिया पर आक्रमण कनरे वाले प्रथम सेना में शरीक रहा क्यों के इन से पूर्व क़ुस्तुनतुनिया पर कई हमले हो चुके थे।

www.Ziaislamic.com

यज़ीद की शिरकत से संबंधित उपर्युक्त वर्णन चार कथन में सन (हिज्री) के अनुसार से प्रथम कथन 49 हिज्री है जब के इस से पूर्व 32 हिज्री में हज़रत अमीर मआविया रज़ियल्लाहु तआला अन्हु और 43 हिज्री में हज़रत बुस्र बिन अरताह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु 44 हिज्री या 46 हिज्री में हज़रत अब्दुर रहमान बिन खालिद रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की सेनापति में हमला किया गया तथा इस हमले में यज़ीद के शरीक होने का वर्णन इतिहास व हदीस की पुस्तकों में कहीं नहीं मिलता तथा ना किसी मोरिक़ ने ऐसी कोई बात लिखी।

अर्थात ये केहना के "यज़ीद हज़रत अब्दुर रहमान बिन खालिद बिन वलीद रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की क़ियादत (नायकत्व) वाले सेना में शरीक था तथा शुभ-सूचना का योग्य है।" हदीस व इतिहास की पुस्तकों में इस बात की सहायता नहीं मिलती बल्कि हदीस व इतिहास की पुस्तकों को ततबिअ करने से मालूम होता है के ये बात मनगढ़ंत है।

इतिहास की पुस्तकों में किसी भी स्पष्टीकरण के बिना इन बातों को मानना इसलामी इतिहास को बदलने के प्रकार है।

एक संदेह और उसका उत्तर

सुनन अबु दाउद की रिवायत से संबंधित एक प्रश्न ये पैदा होता है के हज़रत अबु अयुब अन्सारी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का देहान्त इस युद्ध में हुआ जो यज़ीद के तहत में लड़ी गई थी जैसा के बुखारी शरीफ, जिल्द 01, पः 1598 में हैः-

भाषांतरः महमूद बिन रबीअ केहते हैं मैं ने ये बात लोगों को वर्णन की जिन में सहाबी रसूल (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) हज़रत अबु अयुब अन्सारी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु इस युद्ध के अवसर पर उपस्थित थे जिस में आप का देहान्त हुआ तथा यज़ीद बिन मआविया रूम की धरती में इस सेना के सेनापति था।

सुनन अबु दाउद की रिवायत में हज़रत अब्दुर रहमान बिन खालिद रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का वर्णन है, इस रिवायत में ये भी वर्णन है के हज़रत अबु अयुब अन्सारी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु लगातार जिहाद करते रहे यहाँ तक के आप का देहान्त हुआ।

इस से क़ुस्तुनतुनिया के युद्ध में हज़रत अब्दुर रहमान बिन खालिद रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की सेना में यज़ीद के शरीक होने का विचार हो सकता है किन्तु ये विचार इस लिए सही व उचित नहीं के हज़रत अबु अयुब अन्सारी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का देहान्त हज़रत अब्दुर रहमान बिन खालिद रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के युद्ध में नहीं हुआ बल्कि हज़रत अब्दुर रहमान बिन खालिद रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने 44 हिज्री या 46 हिज्री में क़ुस्तुनतुनिया के युद्ध में इस्लामी सेना की क़ियादत (प्रति) की तथा और 46 हज्री या 47 हिज्री में आप का देहान्त हुआ।

www.Ziaislamic.com

उसके बाद भी क़ुस्तुनतुनिया पर हमले हुए, 49 हिज्री में सुफयान बिन औफ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की क़ियादत में और 52 हिज्री में यज़ीद बिन मआविया की सरकरदी में।

हज़रत अबु अयुब अन्सारी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु हज़रत अब्दुर रहमान बिन खालिद रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के देहान्त के बाद वाले इन दोनों हमलों में शरीक रहे फिर 52 हिज्री के हमले के अवसर पर आप का देहान्त हुआ। और ये 52 हिज्री में सेना यज़ीद की सरगरदी में थी, तथा ये वही सेना है जिस का वर्णन बुखारी शरीफ, जिल्द 01, पः 158 की रिवायत में हुआ।

सुनन अबु दाउद की रिवायत के अनुसार क़ुस्तुनतुनिया के युद्ध में हज़रत अब्दुर रहमान बिन खालिद रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का सेनापति होना, 46 हिज्री या 47 हिज्री में आप का देहान्त होना तथा 49 हिज्री, 52 हिज्री के हमलों में हज़रत अबु अयुब अन्सारी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का शिरकत करना तथा, 52 हिज्री में देहान्त होना, तथा आप के देहान्त वाले युद्ध (सेना) में यज़ीद का शरीक रेहना इन सम्पूर्ण विस्तार से ये बात स्पष्ट हो जाती है के यज़ीद 46 हिज्री में हज़रत अब्दुर रहमान बिन खालिद रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के युद्ध (सेना) में शरीक नहीं रहा।

इस से साबत हो चुका के क़ुस्तुनतुनिया के जिस युद्ध में यज़ीद ने शिरकत की वह प्रथम युद्ध नहीं था बल्कि उस से पूर्व 32 हज्री, 43 हिज्री एवं 46 हिज्री में

क़ुस्तुनतुनिया पर हमले हो चुके थे। जब वह प्रथम सेना में शरीक नहीं था तो हदीस पाक में वर्णन शुभ-सूचना का योग्य भी नहीं।

इस लिए के सरकार पाक सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने ये नहीं फरमाया, खैसर पर हमले करने वाला प्रत्येक सेना बख्शा हुआ है बल्कि फरमायाः खैसर पर हमला करने वाला प्रथम सेना बख्शा हुआ है।

यज़ीद क़ुस्तुनतुनिया के बाद की सेना में भी संतुष्टि व ईमानदारी से शरीक नहीं हुआ

इतिहास से ये साबित हो रहा है के यज़ीद क़ुस्तुनतुनिया के बाद के युद्ध (सेना) में भी संतुष्ट व प्रसन्ना (ईमानदारी) से शरीक नहीं हुआ बल्कि अपने पिता हज़रत अमीर मआविया रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की ज़बर्दस्ती से शरीक हुआ। जैसा के अत तारीक़ अल कामिल, जिल्द 03, पः 314 में 49 हिज्री, 50 हिज्री के घटना में है।

भाषांतरः हज़रत अमीर मआविया रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने 49 हिज्री में कहा गया 50 हिज्री में एक सेना रूम की ओर रवाना किया। हज़रत सुफयान बिन औफ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को इस का सेनापति बनाया तथा यज़ीद को इस सेना के साथ जाने का आदेश दिया तो वह हीले-बहाने करने गला बीमार होने का

प्रदर्शन किया तथा सेना के साथ नहीं गया तो उस के पिता हज़रत अमीर मआविया रज़ियल्लाहु तआला अन्हु रुक गए।

इस यात्रा में इस्लाम के मुजाहिद (धर्मयोद्धा) भूक-प्यास और अधिक कठिनाईयों से बेचार हुए, जब यज़ीद को ये सूचना पहुँची तो उस ने दोहे पढ़े जिस में उस ने कहाः सेना पर फरखादुना स्थान में बुक़ार, सरसाम (ऐसी बीमारी जिस में सर में वरम हो जाता है) और जो कठिनाईयाँ आएँ मुझे इस की कोई चिन्ता नहीं।

मैं दैर-मरवान स्तआन में ऊँची क़ालीन पर बैठा हुआ हुँ एवं उम्मे-कुल्सून (यज़ीद की पत्नी) मेरे साथ है, हज़रत मआविया रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को इस की सूचना हुई तो आप ने क़स्म के साथ फरमाया के उस को अवश्य-अवश्य सुफयान बिन औफ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की सेना के पास भेज दिया जाए ताकि उसे इन कठिनाईयों का अंदाज़ा हो।

उमदतुल खारी, जिल्द 10, किताब उल जिहाद और अत तारीक़ अल कामिल में क़ुस्तुनतुनिया के युद्ध में इसी प्रकार वर्णन है।

उमदतुल खारी तथा तारीक़ अल कामिल में वर्णन इस विस्तार से यज़ीद का किरदार व चरित्र मालूम होता है के इस अवसर पर यज़ीद ने जिहाद में जाने से बचने के लिए बीमारी का बहाना किया। मुजाहिदों (योद्धाओं) को तकलीफें पहुँचीं,

वह बीमारियों में फंसे हुए तो उस ने इन की तकलीफ व बीमारी पर खुशी का प्रदर्शन किया। जो धन्य शरीअत की दृष्टिकोण से जायज़ नहीं।

सरकार पाक सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने मुसलमानों की तकलीफ व कठिनाई पर खुशी का प्रदर्शन करने से मना किया। इमाम बैहखी की शुअबुल ईमान में हदीस पाक (हदीस संख्याः 2507) हैः-

भाषांतरः हज़रत सैयदना वासिला बिन असखआ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से वर्णित है हज़रत रसूलउल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने आदेश कियाः तुम अपने भाई की कठिनाई व मुसीबत पर खुशी का प्रदर्शन मत करो, वरना अल्लाह तआला उस पर रहम करेगा एवं तुम्हें इस में फंसा देगा।

(शुअबुल ईमान, हदीस संख्याः 2507)

यज़ीद ने अपने पिता के आदेश की अवज्ञाकारी व नाफरमानी की जो बड़ा पाप (गुनाह-कबीरा) है स्वस्थ्य होने के बावजूद बीमारी का बहाना किया ये झूठ तथा धोका है। बाद में हज़रत मआविया रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने क़सम दे कर जाने का आदेश दिया तो अनिच्छापूर्वक में शरी हुआ।

इस प्रकार मजबूरी की हालत में ना चाहते हुए जिहाद में शरीक होने से क्या उम्मीद की जा सकती है के इस अमल पर उसे सवाब प्राप्त होगा। जबके हबीब पाक सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम का आदेश हैः-

भाषांतरः निश्चय सम्पूर्ण कर्म व कार्य नीयतों से समानता होते हैं।

(सहीह बुखारी, हदीस संख्याः 1, 54, 2549, 3897 5070, 6649, 6953)

अल्लामा बद्रउद्दीन ऐनी रहमतुल्लाहि अलैह फरमाते हैः-

भाषांतरः यज़ीद के लिए क्या उत्तमता व प्रतिष्ठा हो सकती है? जब के उस का हाल नामवर व मशहूर है।

(उमदतुल खारी, जिल्द 10, पः 244)

यदि यही कहा जाए के सचमुच में यज़ीद अपनी खुशी व ईमानदारी के साथ सेना में शरीक हुआ। वह हदीस के आधार में मुक्ति व मग़फिरत पाने वाला है तो प्रश्न ये होता है के आया इस के बाद के गुनाह (पाप) भी क्षमा व माफ हो चुके?

www.Ziaislamic.com

मदीने खैसर की हदीस की शरह व अनुवाद में सहीह बुखारी के अनुवादक अल्लामा बद्रउद्दीन ऐनी रहमतुल्लाहि अलैह, हाफिज़ इब्म हजर असखलानी रहमतुल्लाहि अलैह (जन्मः 773 हिज्री / देहान्तः 852) और अल्लामा खुसतुलानी रहमतुल्लाहि अलैह ने लिखा के मग़फिरत व मुक्ति की शुभ-सूचना उस शर्त के साथ है के इस सेना में शरीक होने वाला मग़पिरत का योग्य हो।

जैसा के उमदतुल खारी, जिल्द 10, पः 244 में उल्लेख हैः-

भाषांतरः यदि यज़ीद उस सेना में शामिल रहा तब भी वह बाद के बुरे कर्म व कार्य के कारण से उस सामान्य शुभ-सूचना से निवारण हो गया इस लिए के उम्मत के विद्वान इस मसले में निश्चय हैं के सरकार पाक सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम का धन्य आदेश "इन की बख्शिश कर दी गई" इस शर्त के साथ है के वह मग़फिरत के योग्य हों यहाँ तक के यदि उस युद्ध में शरीक रेहने वालों में से कोई बाद में इस्लाम से फिर जाता, मुरतद (स्वधर्म त्यागी) हो जाता अलअयाज़बिल्लाह, तो वह इस सामान्य बशारत में दाखिल नहीं होता।

इस से मालूम होता है के धन्य आदेश का तात्पर्य व अर्थ यही है के इस युद्ध में शरीक रेहने वाले उस व्यक्ति के लिए बख्शिश है जिस में मग़फिरत की शर्त पाई जाए।

(उमदतुल खारी, जिल्द 10, पः 244)

www.Ziaislamic.com

यज़ीद के सहायकों से एक प्रश्न

यज़ीद की हिमायत करने वाले जो क़ुस्तुनतुनिया के युद्ध के प्रथम सेना में इस के शरीक होने का दावा कर के उसे मग़फिरत वाला तथा जन्नती साबित करने की कोशिश करते हैं हालांकि सच्चाई सामने आ चुके के वह प्रथम सेना में शरीक नहीं था तो क्या वह इस पर क़ुरान व सुन्नत की कोई दलील ला सकते हैं के उस ने इस के बाद जो संगीन अपराध व पापों तथा काले-करतूत किए हैं जिस के विस्तार आर्भ किताब में गुज़र चुका। वह सब के सब पाप वर्णन युद्ध में शिरकत के कारण से क्षमा हो चुके, इस का अल्लाह तआला कोई हिसाब ना होगा?

हालांकि कुशल व भले कर्म परिणाम देने में इस प्रकार की और भी शुभ-सूचना (गवाही) हदीसों में वर्णन हैं जैसा के सुनन इब्न माजह, हदीस संख्याः 1451 में हैः-

भाषांतरः हज़रत सैयदना अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से वर्णित है हज़रत रसूलउल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने आदेश किया जिस ने किसी मैय्यत को स्नान दिया, इसको कफन पहना या सुगन्ध लगाई, इस के जनाज़े को कंधा दिया, इस की जनाज़े की नमाज़ पढ़ाई और इस से संबंधित कोई बात देखी तो फिर इस को प्रकट नहीं किया तो वह अपने पापों से इस दिन की तरह पवित्र व शुद्ध हो गया जिस दिन की माँ ने उसे जन्म दिया।

www.Ziaislamic.com

इसी प्रकार हज्ज करने वाले के बारे में सरकार पाक सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम का आदेश है। हज़रत सैयदना अबु हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से वर्णित है, फरमाते हैः-

भाषांतरः मैं ने हज़रत नबी अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम से आदेश करते हुए सुनाः जिस ने हज्ज किया और अश्लील बातें नहीं की तथा बुरा कर्म नहीं किया वह उस दिन के प्रकार लौटा जिस नमाज़ उस की माँ ने उसे जन्म दिया।

(सहीह बुखारी, जिल्द 01, पः 206, हदीस संख्याः 1449)

अधिक सहीह मुसलिम में रिवायत है (हदीस संख्याः 2983) में हैः-

भाषांतरः हज़रत सैयदना अबु हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से वर्णित है हज़रत रसूलउल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने आदेश कियाः अपने तौर पर से अनाथ की ज़िम्मेदारी लेने वाला या दुसरे के लिए कफील बन्ने वाला, मैं और वह जन्नत में इन दो उंगलियों की तरह रहेंगे, इमाम मालिक रहमतुल्लाहि अलैह ने शहादत की उंगली और बीच की उंगली से इशारा किया।

(सहीह मुसलिम, जिल्द 02, पः 411)

www.Ziaislamic.com

इस प्रकार की कई सारी रिवायतें मिलती हैं जिस में बख्शिश व मग़फिरत की बशारतें वर्णन हैं।

कया उपर्युक्त वर्णन बशारतें तथा अन्य हदीसों में वर्णन पापों की बख्शिश, दोज़ख से छुटकारे की शुभ-सूचनाओं के तात्पर्य ये है के कोई व्यक्ति वर्णन आमाल (कर्म) को परिणाम देने के बाद फर्ज़ नमाज़ छोड़ दे, शराब पी ले, चोरी करे, किसी पर अत्याचार करे, किसी को तकलीफ पहुँचाए, किसी को हत्या करे तब भी इस का पूर्व नेक अमल के कारण बाद वाले सम्पूर्ण पापों की बख्शिश हो जाएगी?

"नहीं" बल्कि इन कुशल कर्मों व आमाल के कारण बाद वाले पाप क्षमा होते हैं, पूर्व व पहले के कर्म के कारण बाद वाले पाप क्षमा नहीं होंगे, वरना ये केहना पड़ेगा के जिस व्यक्ति ने हज्ज किया या मैय्यत को स्नान दिया या अनाथ की परवरिश की ज़िम्मेदारी ली वह व्यक्ति यदि फर्ज़ नमाज़ छोड़ दे, शराब पी ली, चोरी करे, किसी पर अत्याचार करे, किसी को तकलीफ पहुँचाए, किसी को हत्या करे तो ये बुरे अमाल व कर्म इस को नुकसान नहीं पहुंचाते इस लिए के इस ने उपर्युक्त वर्णन कुशल व भले कर्म कर लिए।

हालांकि इस प्रकार की बात कोई भी बुद्धिमान स्वीकार नहीं कर सकता, ये विचार हवा में क़िला बनाने के प्रकार और क्या हो सकता है। यदि इस दृष्टिकोण को सत्य घोषित दिया जाए तो समाज अत्याचार व कठोरता से खाली नहीं रेह सकता।

उपसंहार व निष्कर्ष

अतः मुहद्दिसीन किराम ने हदीस पाक, भाषांतरः मेरी उम्मत की जो प्रथम सेना खैसर के शहर पर हमला करेगी वह बख्शा हुआ है, की प्रमाणित निर्वचन वर्णन किया है, एक अनुवाद व निर्वचन ये वर्मन किया है के मदीने खैसर से तात्पर्य कुस्तुनतुनिया नहीं बल्कि हिम्स है जो सरकार पाक सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के धन्य ज़माने में रूम की राजधानी थी जैसा के फत्हुल बारी में वर्णन हदीस की शरह के प्रति वर्णन है और ये शहर हज़रत उमर फारूख की खिलाफत 15 हिज्री में विजय हुआ जब के यज़ीद पैदा भी नहीं हुआ था।

अन्य अनुवादकों के कथन व क़ौल यदि इस से कुस्तुनतुनिया ही तात्पर्य व मुराद लिया जाए तब भी हदीस में वर्णन मग़फिरत व मुक्ति की शुभ-सूचना का वह योग्य नहीं।

क्यों के कुस्तुनतुनिया के प्रथम युद्ध में यज़ीद की शिरकत साबित नहीं, जबके कुसतुनतुनिया पर प्रथम हमला 32 हिज्री में हज़रत मआविया रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने किया, दुसरा हमला 43 हिज्री में हज़रत बुस्र बिन अरताह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने किया तथा तीसरा हमला 44 हिज्री या 46 हिज्री में हज़रत अब्दुर रहमान बिन खालिद बिन वलीद रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने किया, इन आरम्भ के तीनों हमलों में यज़ीद शरीक नहीं हुआ।

www.Ziaislamic.com

यज़ीद की क़ुस्तुनतुनिया के युद्ध में शरीक रेहनी से संबंधित इतिहास की पुस्तकों में 4 कथन हैं- 49 हिज्री, 50 हिज्री, 52 हिज्री तथा 55 हिज्री.

उपर्युक्त वर्णन 4 कथनों में से किसी भी कथन को तरजीह के योग्य घोषित दिया जाए तो यज़ीद क़ुस्तुनतुनिया के प्रथम सेना (युद्ध) में शरीक होने वाला नहीं घोषित पा सकता। क्यों के वर्णन स्पष्टीकरण 32 हज्री, 43 हिज्री, 44 हिज्री, 46 हिज्री में क़ुस्तुनतुनिया पर हमले हो चुके थे अर्थात यज़ीद हदीस में वर्णन मग़फिरत व मुक्ति व बशारत का योग्य नहीं। *वबिल्लाही तौफीक़*

अल्लाह तआला अपनी और अपने हबीब पाक सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की मुहब्बत हमारे दिलों को आबाद रखे। और अहले-बैत पाक, सहाबा किराम, बुज़ुर्गाने-दीन तथा उम्मत के सालेहीन की मुहब्बत व स्नेह से उजागर करे।

हमारे धर्म व ईमान को प्रत्येक प्रकार के फितनों से सुरक्षित रखे तथा हमेशा क़ुरान व सुन्नत पर चलने की तौफीक़ व मार्गदर्शन प्रदान करे।

आमीन

www.Ziaislamic.com